लखनऊ

रविवार, 12 अप्रैल, 2026

वर्ष : 11 | अंक: 228

मूल्य : 1 रुपये

पृष्ठ : 8

UPHIN/2014/57034

हिंदी दैनिक

आर्यावर्त क्रांति

"मेहनत की आदत डाल लो, किस्मत खुद एक दिन आपको सलाम करने आएगी।"

TODAY WEATHER

DAY 28° Hi

NIGHT 17° Low

संक्षेप

भाजपा अध्यक्ष नितिन नबीन बोले- महात्मा फुले के सपनों को साकार करेगा नारी शक्ति वंदन बिल

नई दिल्ली, एजेंसी। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन ने 31 जनवरी, 2026 को महात्मा ज्योतिबा फुले की 200वीं जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि लोकसभा में महिला विधायकों के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण महात्मा ज्योतिबा फुले के आदर्शों के अनुरूप है। नबीन के साथ भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव अरुण सिंह, दुष्यंत कुमार गौतम और तरुण चुघ भी नई दिल्ली में फुले को पुष्पांजलि अर्पित करने के लिए मौजूद थे। महात्मा ज्योतिराव फुले महाराष्ट्र के एक भारतीय समाजसेवी, सुधारक और लेखक थे, जिनका जन्म 11 अप्रैल, 1827 को सतारा में हुआ था। उन्हें जाति व्यवस्था के उन्मूलन, महिला शिक्षा को बढ़ावा देने और शोषितों के सशक्तिकरण के लिए जाना जाता है। उन्होंने अपने अनुयायियों के साथ मिलकर सत्यशोधक समाज की स्थापना की ताकि किसानों और निम्न जाति के लोगों को समान अधिकार मिल सकें। मीडिया से बात करते हुए नितिन नबीन ने कहा कि समाज सुधार में उनके योगदान के लिए देश आज भी उन्हें याद करता है। पहले बालिका विद्यालय की स्थापना से लेकर सती प्रथा के उन्मूलन में उनकी भूमिका तक, हमारा मानना है कि यह आज भी प्रासंगिक है। 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' अभियान से लेकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने, शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाने और नारी वंदन अधिनियम के माध्यम से महिलाओं के प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित करने तक, प्रधानमंत्री मोदी ये सभी कार्य कर रहे हैं 33 प्रतिशत आरक्षण ज्योतिराव फुले के आदर्शों के अनुरूप होगा। केंद्र सरकार लोकसभा सीटों की संख्या 543 से बढ़ाकर 816 करने के लिए संशोधन लाने की योजना बना रही है, जिसमें कम से कम 273 सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित करने का प्रस्ताव है।

'वंदे मातरम्' गाने से इनकार पर आगबबूला हुए मुख्यमंत्री मोहन यादव, पूरी कांग्रेस से मांगा इस्तीफा

नई दिल्ली, एजेंसी। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने शनिवार को कहा कि यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है कि इंदौर नगर निगम की एक कांग्रेस पार्षद ने 'वंदे मातरम' गाने से इनकार कर दिया। उन्होंने आगे कहा कि यह भी उतना ही खेदजनक है कि उन्होंने खुलेआम कहा, 'मैं इसे नहीं गाऊंगी।' इस घटना से कांग्रेस पार्टी का असली चेहरा सामने आ गया है। मुख्यमंत्री यादव ने कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी (जिनके गृह जिले में ये घटनाएँ घटीं), कांग्रेस राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खर्गे और विपक्ष के नेता राहुल गांधी से पूछा है कि नगर निगम पार्षद रुबीना खान जैसे राष्ट्रविरोधी तत्वों को प्रोत्साहित करना उनकी नीति क्यों है। मोहन यादव ने जीतू पटवारी से यह भी स्पष्ट करने को कहा कि कांग्रेस टिकट पर चुने गए उन पार्षदों के खिलाफ क्या कार्रवाई की जा रही है जो 'भारत माता की जय' का नारा लगाने और 'वंदे मातरम' गाने से इनकार कर रहे हैं। मोहन यादव ने जोर देकर कहा कि जीतू पटवारी और अन्य कांग्रेस नेताओं को अपने पदों से इस्तीफा दे देना चाहिए और टिप्पणी की कि कांग्रेस पार्टी ने 'वंदे मातरम' की भावना को खंडित कर दिया है।

'लेफ्ट की कार्बन कॉपी बन गई है टीएमसी': मुर्शिदाबाद में बरसे पीएम मोदी, कहा- घुसपैठियों की सरकार का अंत तय

कोलकाता, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पश्चिम बंगाल के जंगीपुर में एक विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) सरकार पर हमला बोला है। पीएम मोदी ने साफ लफ्जों में कहा कि बंगाल की जनता अब 'भय' से ऊब चुकी है और 'भरोसे' की ओर बढ़ रही है। उन्होंने दावा किया कि बंगाल में भाजपा चुनाव जीत रही है।

पीएम मोदी ने कहा कि जो गुंडे और सिंडिकेट पहले वामपंथी दल सीपीआईएम के लिए काम करते थे, वे अब टीएमसी का हिस्सा बन चुके हैं। पीएम ने आरोप लगाया कि भ्रष्टाचार, 'कट मनी'और कमीशनखोरी का जो खेल लेफ्ट ने शुरू किया था, टीएमसी ने उसे और खतरनाक बना दिया है। हथियारों की तस्करी, ड्रग्स और मवेशी तस्करी का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि राज्य में कानून-व्यवस्था पूरी तरह चरमरा चुकी है।

बंगाल में बंगालियों को अल्पसंख्यक नहीं बनने देंगे: पीएम मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि बंगाल में टीएमसी मां, माटी, मानुष का नारा लगाकर सत्ता में आई थी। लेकिन अब बंगाल में घुसपैठियों द्वारा, घुसपैठियों के वोट से, घुसपैठियों की सरकार बनाना चाहती है। बंगाल अब तुष्टीकरण और वोटबैंक के खेल को और बर्दाश्त नहीं करेगा। हम पश्चिम बंगाल में बंगालियों को अल्पसंख्यक नहीं बनने देंगे।

शरणार्थियों को नागरिकता की गारंटी: पीएम मोदी

पीएम मोदी ने समान नागरिक संहिता (यूसीसी) लागू करने और तुष्टीकरण की राजनीति को खत्म करने का वादा किया है। उन्होंने विशेष रूप से मतुआ और नामशूद्र समुदायों को संबोधित करते हुए कहा कि आप किसी टीएमसी नेता की दया पर यहां नहीं हैं, आपको भारत का संविधान सुरक्षा देता है। यह मोदी की गारंटी है कि भाजपा सरकार बनते ही सीएए के तहत नागरिकता देने की प्रक्रिया में तेजी लाई जाएगी।

सिल्क किसानों की बदहाली पर पीएम ने क्या कहा?

मुर्शिदाबाद के प्रसिद्ध सिल्क उद्योग पर बात करते हुए पीएम ने कहा कि टीएमसी की अनदेखी के कारण यहां के किसानों का भविष्य बर्बाद हो गया है। टीएमसी बंगाल के मूल निवासियों को अल्पसंख्यक बनाने पर तुली है, जिसे भाजपा कभी सफल नहीं होने देगी।

'टीएमसी के भय को मोदी के भरोसे में बदलना है'

पीएम मोदी ने कहा कि कुछ दिन पहले हमने बिहार, महाराष्ट्र, हरियाणा में देखा है जहां भी भारी मतदान हुआ है और महिलाएं वोट डालने निकली हैं, वहां भाजपा-एनडीए को प्रचंड बहुमत मिला है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि मोदी गारंटी TMC के भय को हटाकर भरोसे में बदलने की है। ये गारंटी पूरी कैसे होगी ये भाजपा के घोषणा पत्र में है। उन्होंने कहा कि बीजेपी भ्रष्टाचार और कानून व्यवस्था को लेकर एक व्हाइट पेपर जारी करेगी ताकि TMC के हर गुंडे, हर भ्रष्ट विधायक-मंत्री का कानूनी रूप से पूरा हिसाब किया जा सके। उन्होंने कहा कि इसमें निर्मम सरकार के 15 साल का पूरा हिसाब होगा। पीएम मोदी ने कहा कि भाजपा ने संकल्प लिया है कि वो बंगाल को विकास की नई ऊंचाई पर ले जाएगी। कल ही बंगाल भाजपा ने अपना घोषणापत्र जारी किया है। इसमें मैंने जो आपको 6 गारंटियां दी हैं, उन्हें लागू करने का रोडमैप है। मैं बंगाल भाजपा के सभी साथियों को इस शानदार घोषणापत्र के लिए बधाई देता हूं। मोदी की गारंटी, टीएमसी की निर्मम सरकार के भय को हटाकर भरोसे में बदलने की है और ये गारंटी पूरी कैसे होगी यह पूरा खाका भाजपा के घोषणापत्र में है।

तमिलनाडु में विजय का शंखनाद : कार्यकर्ताओं को दिया जीत का मंत्र, कहा- सच्चे लोगों का शासन स्थापित करने का चुनाव

नई दिल्ली, एजेंसी। तमिलनाडु की राजनीति में अब 'सुपर संडे' से पहले ही सियासी पारा चरम पर पहुंच गया है। अभिनेता से राजनेता बने थलपति विजय की पार्टी तमिलगा वेट्री कझगम (टीवीके) ने विधानसभा चुनावों के लिए अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। शनिवार को पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए विजय ने चुनावी समर की अंतिम दौड़ का बिगुल फूंक दिया। उन्होंने अपने समर्थकों और कार्यकर्ताओं से भावुक अपील करते हुए कहा कि इस चुनावी अभियान को महज एक प्रचार न समझें, बल्कि इसे एक विजयी जुलूस में तब्दील कर दें।

राजनाथ सिंह का किसानों को बड़ा भरोसा, बोले- मेरे अंदर का किसान जिंदा है, धन की कोई कमी नहीं होने देंगे

नई दिल्ली, एजेंसी। मध्य प्रदेश के रायसेन में 11 अप्रैल को तीन दिवसीय उन्नत कृषि महोत्सव के उद्घाटन के अवसर पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने किसानों को धन और संसाधनों की कमी न होने का आश्वासन दिया। केंद्रीय मंत्री राजनाथ सिंह और शिवराज सिंह चौहान ने कृषि विकास को समर्थन देने के उद्देश्य से आयोजित इस कार्यक्रम का आधिकारिक रूप से उद्घाटन किया। उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए सिंह ने कहा कि गांवों और कृषि के लिए बहुत कुछ किया जाना बाकी है, और मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि हमारी सरकार किसानों के कल्याण के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। राजनाथ ने कहा कि धन या संसाधनों की कोई कमी नहीं होगी। हमारी सरकार ने हमेशा यह सुनिश्चित करने के लिए काम किया है कि प्रत्येक किसान को सहायता मिले। उन्होंने आगे कहा कि मैं कई वर्षों से सार्वजनिक जीवन में हूं, कृषि मंत्री सहित कई जिम्मेदारियां संभाली हैं। मेरे भीतर का किसान कभी नहीं गया। आज भी, रक्षा मंत्री के रूप में, मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि किसानों के प्रति मेरी प्रतिबद्धता अपरिवर्तित है। कृषि मंत्री और मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व की प्रशंसा की और मजबूत कृषि और किसानों की आय बढ़ाने के लक्ष्य पर टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में, हमारा लक्ष्य एक गौरवशाली, समृद्ध, आत्मनिर्भर और विकसित भारत का निर्माण करना है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने स्पष्ट कर दिया है: भारत किसी को उकसाएगा नहीं, लेकिन उकसाए जाने पर उन्हें नहीं बख्शेगा। आज देश सुरक्षित है, फिर भी सच्चा विकास मजबूत कृषि और किसानों की आय में वृद्धि के बिना संभव नहीं है। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय ने रायसेन में तीन दिवसीय 'उन्नत कृषि महोत्सव 2026: प्रदर्शनी एवं प्रशिक्षण' का आयोजन किया। इस आयोजन में हैंगर 1 और 2 के बीच 300 स्टॉल लगाए गए, जबकि हैंगर 3 उद्घाटन एवं सांस्कृतिक हॉल के रूप में कार्य कर रहा था।

मणिपुर में सुरक्षा बलों की बड़ी कार्रवाई : भारी मात्रा में हथियार और 1,800 किलो खसखस बरामद

मणिपुर। मणिपुर में शांति बहाली और अवैध गतिविधियों पर लगाम लगाने के लिए सुरक्षा बलों का अभियान जारी है। शुक्रवार को चुराचंदपुर और चंदेल जिलों में चलाए गए दो अलग-अलग ऑपरेशनों में सुरक्षा बलों ने न केवल हथियारों का जखीरा बरामद किया, बल्कि नशीले पदार्थों की तस्करी के एक बड़े प्रयास को भी विफल कर दिया। पुलिस के एक बयान के अनुसार, आरोपियों को शुक्रवार को चूड़ाचांदपुर थाना क्षेत्र के टी बंगला एमवीसीपी इलाके से गिरफ्तार किया गया। बयान के मुताबिक, उनके पास से एक कार्बाइन, नौ मिमी की एक पिस्तौल, 1,800 किलोग्राम खसखस से भरे 36 बोरे और दो वाहन जब्त किए गए। वहीं, एक अन्य अभियान में सुरक्षा बलों ने चंदेल जिले के चकपिकारोंग थाना क्षेत्र में ताइजांग गांव के वन क्षेत्र से हथियारों और विस्फोटकों का जखीरा भी बरामद किया। बरामद किए गए सामान में एके-47 राइफल, मैगजीन सहित चार देसी बंदूकें, सात मोर्टार, आईईडी बनाने से संबंधित सामग्री और पांच वॉकी-टॉकी सेट शामिल हैं। मणिपुर में दो वर्ष पहले जातीय हिंसा भड़कने के बाद से ही सुरक्षा बल राज्य में लगातार तलाशी अभियान चला रहे हैं। मई 2023 में मणिपुर में मेइती और कुकी-जो समूहों के बीच हुई जातीय हिंसा में260 से अधिक लोग मारे गए थे और हजारों लोग बेघर हो गए थे। सुरक्षा बलों का मानना है कि इस तरह की बरामदगी से उपद्रवी तत्वों के मंसूबों को कमजोर करने और राज्य में हथियारों के अवैध प्रसार को रोकने में मदद मिलेगी।

ईसी की मदद से उम्मीदवारी रद्द कराने की साजिश : ममता

कोलकाता, एजेंसी। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा है कि भाजपा ने चुनाव आयोग की मदद से उनकी उम्मीदवारी को रद्द कराने का प्रयास किया। उन्होंने यह भी दावा किया कि विशेष गहन संशोधन के दौरान भाजपा ने जबरन 90 लाख मतदाताओं के नाम वोटर लिस्ट से हटा दिए। पश्चिम मेदिनीपुर जिले के केशियरी में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए ममता बनर्जी ने कहा 'भाजपा ने चुनाव आयोग की मदद से मेरे खिलाफ झूठे मुकदमे दर्ज कराने की कोशिश की ताकि भवानीपुर सीट से मेरी उम्मीदवारी रद्द हो सके, लेकिन तृणमूल कांग्रेस कार्यकर्ताओं और जनता ने उनकी इस साजिश को नाकाम कर दिया।' हालांकि, उन्होंने इस संबंध में और अधिक जानकारी नहीं दी।

चुनाव में धांधली का लगाया आरोप

मुख्यमंत्री ने भाजपा पर 'धोखाधड़ी के माध्यम से जबरन वोट कब्जाने की साजिश रचने' का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि भाजपा के पास लोकतांत्रिक तरीके से चुनाव लड़ने और जीतने का साहस नहीं है। उन्होंने कहा कि इसीलिए वे मतदाताओं के नाम हटा रहे हैं। वे अपने पक्ष में परिणाम बदलने के लिए ईवीएम से छेड़छाड़ करने की भी योजना बना रहे हैं। ममता बनर्जी ने विश्वास जताया कि विधानसभा चुनावों में भाजपा की हार और दिल्ली से उनकी सत्ता जाने के बाद न्याय होगा।

मतदान और चुनाव लड़ने का अधिकार मौलिक नहीं, सुप्रीम कोर्ट ने दोहराया, हाईकोर्ट का फैसला किया रद्द

नई दिल्ली, एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने एक बार फिर स्पष्ट किया है कि न तो मतदान का अधिकार और न ही चुनाव लड़ने का अधिकार मौलिक अधिकार है। शीर्ष अदालत ने कहा कि ये दोनों अधिकार अलग-अलग हैं और पूरी तरह कानून (स्टैच्यूट) से संचालित होते हैं, न कि संविधान के तहत मौलिक अधिकार के रूप में।

न्यायमूर्ति बीवी नागरत्ना और न्यायमूर्ति आर महादेवन की पीठ ने यह टिप्पणी राजस्थान के जिला दुग्ध संघों के चुनाव से जुड़े एक विवाद की सुनवाई के दौरान की। यह फैसला न्यायमूर्ति महादेवन ने लिखा। अदालत ने अपने फैसले में कहा कि मतदान का अधिकार व्यक्ति को चुनाव प्रक्रिया में भाग लेने का अवसर देता है, जबकि चुनाव लड़ने का अधिकार एक अलग और अतिरिक्त अधिकार है, जिस पर योग्यता, अयोग्यता और अन्य संस्थागत शर्तें लागू की जा सकती हैं। कोर्ट ने ज्योति बसु बनाम देवी घोषाल (1982) और जावेद बनाम हरियाणा राज्य (2003) जैसे पुराने फैसलों का हवाला देते हुए कहा कि ये अधिकार केवल कानून द्वारा दिए गए हैं और इन्हें उसी सीमा तक लागू किया जा सकता है, जितना कानून अनुमति देता है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि राजस्थान हाईकोर्ट ने मतदान और चुनाव लड़ने के अधिकार को एक समान मानकर गलती की। अदालत के अनुसार, संबंधित उपविधियां केवल चुनाव लड़ने की पात्रता तय करती हैं और वे मतदान के अधिकार को प्रभावित नहीं करतीं। कोर्ट ने स्पष्ट किया कि इन उपविधियों का उद्देश्य यह तय करना है कि कौन व्यक्ति चुनाव लड़ सकता है या पद पर बना रह सकता है। इन्हें अयोग्यता से जोड़ना गलत है।

न्याय के सिद्धांत का उल्लंघन

सुप्रीम कोर्ट ने यह भी कहा कि हाईकोर्ट ने बिना सभी प्रभावित पक्षों को सुने व्यापक फैसला दे दिया, जो प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत सभी पक्षों को सुनने का अधिकार का उल्लंघन है।

क्या नतीजा निकला?

सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट के फैसले को रद्द करते हुए अपील स्वीकार कर ली। साथ ही यह भी साफ किया कि सहकारी संस्थाएं अपने उपविधियों के जरिए चुनाव प्रक्रिया और प्रतिनिधित्व को नियंत्रित कर सकती हैं। यह फैसला चुनावी अधिकारों की कानूनी प्रकृति और उनके दायरे को स्पष्ट करने वाला महत्वपूर्ण निर्णय माना जा रहा है।

बंगाल से कर देंगे ममता दीदी के गिरोह का सफाया ; अभिषेक बनर्जी पर भी साधा निशाना : अमित शाह

कोलकाता, एजेंसी। प. बंगाल चुनाव से पहले कृष्णनगर उत्तर सीट पर तृणमूल को बड़ा झटका लगा है। निर्वाचन आयोग ने तृणमूल प्रत्याशी अभिनव भट्टाचार्य का नामांकन रद्द कर दिया है। रिटर्निंग ऑफिसर के अनुसार, अभिनव जनप्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा 9ए के तहत अयोग्य पाए गए। जांच में सामने आया कि नामांकन के समय वे सरकारी अनुबंधों से जुड़े थे, जो हितों के टकराव के चलते उम्मीदवारी में बाधक है। अभिनव ने इसे दुर्भाग्यपूर्ण बताया। तृणमूल नेतृत्व इस सीट पर नया चेहरा उतारने की तैयारी में है। तमिलनाडु की 234 विधानसभा सीटों पर कुल 326 केंद्रीय पर्यवेक्षकों की निगरानी में 23 अप्रैल को वोट डाले जाएंगे। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने चुनाव आयुक्त डॉ. एसएस संधू व डॉ. विवेक जोशी के साथ मिलकर समीक्षा की। पर्यवेक्षकों से कहा गया कि वह अपने संपर्क नंबर और जनता, राजनीतिक पार्टियों, उम्मीदवारों या उनके एजेंटों की शिकायतें सुनने की जगह और समय को अच्छी तरह से प्रकाशित करें। कुल 4,610 उम्मीदवार : तमिलनाडु में 4,610 उम्मीदवार अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। करूर सीट से सबसे अधिक 85, तो अंबासमुद्रम में सबसे कम 5 प्रत्याशी मैदान में हैं। चुनाव से पहले टीएमसी छोड़कर अपनी पार्टी बनाने वाले हुमायूं कबीर विवादों में हैं। उन पर भाजपा की 'बी' टीम के तौर पर काम करने का आरोप लगाया गया है। एआईएमआईएम ने भी उनकी पार्टी से गठबंधन तोड़ दिया है। इस पर टीएमसी सांसद सायनी घोष ने तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि मैं पहले दिन से कहती आ रही हूं कि वह भाजपा की 'बी' टीम के तौर पर काम कर रहे हैं। उनकी नीयत ठीक नहीं है। उन्होंने सभी को धोखा देने का काम किया है। जनता उन्हें जवाब देगी। मीडिया से बातचीत में सायनी घोष ने कहा कि वीडियो सामने आ गया है, जिससे साफ हो गया है कि वह भाजपा से मिले हुए हैं। जिसकी नीयत ठीक नहीं है, उसकी मुराद कभी पूरी नहीं होती है। उन्होंने हुमायूं कबीर पर पश्चिम बंगाल के मुस्लिमों को धोखा देने का आरोप लगाते हुए कहा कि इसका जवाब इसी समुदाय के लोग भी देंगे। उनका वीडियो सामने आया है, सभी उनसे नाता तोड़ना चाहते हैं। उन्होंने पश्चिम बंगाल मुस्लिम समुदाय के साथ गद्दारी की है।

'भारत के लिए शांति जरूरी' : शशि थरूर बोले- ईरान-अमेरिका शांति वार्ता में पाकिस्तान की भूमिका अलग

नई दिल्ली, एजेंसी। ईरान-अमेरिका के बीच पाकिस्तान की मध्यस्थता से भारत सरकार पर उठते सवालों के बीच कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि किसी तरह की कोई प्रतिस्पर्धा नहीं हैं, क्योंकि इसमें (मध्यस्थता) में भारत और पाकिस्तान के लिए परिस्थितियां अलग-अलग हैं।

कांग्रेस सांसद ने कहा, 'पाकिस्तान ईरान का पड़ोसी देश है। उसकी सीमा 900 किलोमीटर लंबी है और लगभग चार करोड़ शिया पाकिस्तानी हैं। इसलिए उसका इस मध्यस्थता में शामिल होना, एक अलग विषय है। अगर फिर से ईरान में हमले हुए तो शरणार्थी भी पाकिस्तान ही जाएंगे।' पाकिस्तान में अमेरिका-ईरान बातचीत पर कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने कहा कि यह पाकिस्तान ही कर सकता है, क्योंकि वह अमेरिका के इशारे पर ऐसा कर रहा है।

पाकिस्तान ही निभा सकता है ऐसी भूमिका : शशि थरूर

थरूर ने कहा, 'पाकिस्तान के वॉशिंगटन के साथ जिस तरह के रिश्ते हैं, वे ऐसे हैं कि वॉशिंगटन ने उनसे ऐसा (मध्यस्थता) करने को कहा है। कुछ आरोप ऐसे भी हैं कि वॉशिंगटन ने पाकिस्तानी प्रधानमंत्री को उनका मैसेज (एक्स पोस्ट) भी लिखकर दिया, क्योंकि उसकी हेडिंग थी 'ड्राफ्ट: एक्स पर पाकिस्तान के पीएम का मैसेज'। पोस्ट के लिए जिस तरह की भाषा का इस्तेमाल हुआ, वह भी वॉशिंगटन वाली भाषा थी।' उन्होंने कहा, 'कुछ शब्द ऐसे थे, जिन्हें डोनाल्ड ट्रंप ने भी इस्तेमाल किया था। इसलिए इस मामले में पाकिस्तान ने अमेरिका के साथ जिस तरह की भूमिका निभाई है, वह सिर्फ पाकिस्तान ही कर सकता है।'

शासनादेश को ठेंगे पर रख कर कमला इंडियन गैस एजेंसी कर रहा मनमानी

आर्यावर्त संवाददाता

कुड़वार/सुल्तानपुर। क्षेत्र स्थित कमला इंडियन गैस एजेंसी की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल उठ रहे है। एजेंसी पर दिन भर लंबी लाइन लगी रहती है डीएसी नंबर होने के बावजूद रहने भी उन्हें गैस सिलेंडर नहीं मिल पा रहा है, जिससे उपभोक्ता निराश होकर वापस लौट रहे है।

स्थानीय लोगों का कहना है कि जिन उपभोक्ताओं ने ऑनलाइन सिलेंडर बुक किया है उनका डीएसी नंबर मिलान कर गैस की पासबुक और 970/-₹ ले लिया जाता है और सिलेंडर 10 दिन बाद लेने के लिए कहा जाता है। जबकि पासबुक और एडवांस में पैसा लेने का कोई प्रावधान नहीं है। जबकि दूसरी ओर कालाबाजारी करने वालों के पास घरेलू गैस सिलेंडर आसानी से उपलब्ध है। ऐसे में यह सवाल उठता है कि जब आम उपभोक्ता को गैस नहीं मिल रही, तो अवैध रूप से सिलेंडर कैसे उपलब्ध हो जा रहे है। क्षेत्र में कई दुकानदार घरेलू गैस सिलेंडर का खुलेआम व्यावसायिक उपयोग कर रहे है। इस पर एजेंसी कर्मचारियों का कहना है कि होटल संचालक अन्य उपभोक्ताओं के नाम पर सिलेंडर बुक कराकर उठा ले जाते हैं। हालांकि, उपभोक्ताओं का तर्क है कि जब हर ग्राहक का पूरा डेटा एजेंसी के पास मौजूद है, तो इस तरह की गड़बड़ी संभव ही नहीं होनी चाहिए।

सूत्रों के अनुसार, रात के समय कालाबाजारी के जरिए सिलेंडरों का वितरण किए जाने की भी चर्चा है। यदि यह सच है, तो यह न केवल नियमों का उल्लंघन है, बल्कि प्रशासनिक व्यवस्था पर भी सवाल खड़ा करता है। आरोप यह भी है कि उच्चाधिकारी केवल औपचारिक निरीक्षण कर फोटो खिंचवाकर अपनी जिम्मेदारी पूरी कर लेते हैं। जबकि जमीनी स्तर पर समस्याएं जस की तस बनी हुई हैं। इस सम्बन्ध में पूर्ति निरीक्षक मयंक चतुर्वेदी ने बताया की जांच की जाएगी।

चूल्हे से उठी चिंगारी से लगी आग, तीन घर जलकर राख

आर्यावर्त संवाददाता

बल्दीराय/सुल्तानपुर। जनपद के बल्दीराय तहसील क्षेत्र अंतर्गत ग्राम पंचायत रैंचा के पूरे हरबंस में शनिवार सुबह एक दर्दनाक हादसा हो गया। जानकारी के अनुसार गांव के निवासी छोटे लाल कोरी के घर की महिलाएं खाना बना रही थी तभी तेज हवा से चूल्हे से उठी चिंगारी से घर के छप्पर में आग लग गई। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप धारण कर लिया और आसपास के दो अन्य घरों को भी अपनी चपेट में ले लिया। आग की लपटों ने राम उजागिर की गौशाला को भी नहीं छोड़ा, जहां बंधी तीन गायें बुरी तरह झुलस गईं। इनमें से दो गायों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि एक गाय गंभीर रूप से घायल बताई जा रही है। घटना की सूचना मिलते ही दमकल विभाग की टीम मौके पर पहुंची और ग्रामीणों के सहयोग से कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। मौके पर पहुंचे लेखपाल द्वारा आग से हुए नुकसान का आकलन किया गया है। फिलहाल प्रशासन द्वारा पीड़ति परिवार को राहत दिलाने की प्रक्रिया शुरू की जा रही है।

टूरिस्ट बस और कार में भिड़ंत, 25 लोग घायल ; लखनऊ से नैमिष धाम जा रहे थे

आर्यावर्त संवाददाता

सीतापुर। यूपी के सीतापुर में शनिवार को टूरिस्ट बस और कार में भिड़ंत हो गई। हादसे में बस सवार 25 लोग घायल हुए हैं। ये सभी लोग लखनऊ के सचिवालय कालोनी के रहने वाले हैं। टूरिस्ट बस लखनऊ से नैमिष धाम जा रही थी।

हादसा संदना थाना क्षेत्र के सिधौली-मिश्रिख मार्ग स्थित रालामऊ गांव के पास हुआ। बताया गया कि हादसे में ड्राइवर चंदन शर्मा पुत्र सीताराम शर्मा निवासी कानपुर रोड, सेक्टर-G, एलडीए कॉलोनी, लखनऊ घायल है। लेकिन, वह कार लेकर मौके से भाग गया है।

सेंट्रल मार्केट विवाद : सेटबैक पॉलिसी का विरोध, पलायन के पोस्टर लेकर धरने पर बैठी महिलाएं, बच्चे भी शामिल

आर्यावर्त संवाददाता

मेरठ। मेरठ के शास्त्री नगर स्थित सेंट्रल मार्केट प्रकरण को लेकर विरोध लगातार तेज होता जा रहा है। शुक्रवार को सेक्टर-2 के स्थानीय निवासी धरने पर बैठ गए और सेटबैक पॉलिसी के खिलाफ जोरदार प्रदर्शन किया। धरने पर बैठे लोगों का कहना है कि उनके मकान पहले से ही छोटे हैं। ऐसे में यदि सेटबैक नीति लागू की गई तो उनके घरों का बड़ा हिस्सा प्रभावित हो जाएगा।

दी आंदोलन की चेतावनी

स्थानीय निवासियों ने साफ शब्दों में कहा कि वे अपने घरों में किसी भी हालत में सेटबैक पॉलिसी लागू नहीं होने देंगे। उनका कहना है कि यदि प्रशासन ने इस नीति को जबरन लागू करने की कोशिश की तो आंदोलन को और तेज किया जाएगा।

प्रदर्शन कर रहे लोगों ने प्रशासन से इस मामले में पुनर्विचार करने और आम लोगों के हित में व्यावहारिक समाधान निकालने की मांग की। उनका कहना है कि इस नीति से हजारों परिवारों के सामने आवास का संकट खड़ा हो सकता है। धरना स्थल पर मौजूद लोगों ने चेतावनी दी कि जब तक उनकी मांगों पर गंभीरता से विचार नहीं किया जाता, तब तक उनका विरोध जारी रहेगा।

शास्त्री नगर सेंट्रल मार्केट में तोड़ी जा रही है दुकान और खुल रहा है बाजार

शास्त्री नगर स्थित सेंट्रल मार्केट में नगर निगम की कार्रवाई के तहत कई दुकानों को तोड़ा जा रहा है। प्रशासन का कहना है कि सेटबैक पॉलिसी और अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई के तहत यह कदम उठाया जा रहा है। इस बीच बाजार भी धीरे-धीरे खुलने लगा है। कुछ दुकानदारों ने दुकानें खोल दी हैं, जबकि कई व्यापारी और स्थानीय लोग अभी भी कार्रवाई का विरोध कर रहे हैं। मौके पर पुलिस और प्रशासन की टीम तैनात है ताकि स्थिति को नियंत्रित रखा जा सके।

एकल दिशा रूट मैप से बदली नगर की चाल

सुल्तानपुर। नगर ने आखिरकार चैन की साँस लेना सीख ही लियाकृवो भी तब, जब सालों से जाम में फंसी जिंदगी को "एकल दिशा रूट मैप" नाम का रामबाण मिल गया। जिन गलियों में पहले हॉर्न की आवाज़ें आरती की तरह गूंजती थीं, वहां अब गाड़ियाँ भी शांति से चलने लगी हैं। लगता है ट्रैफिक भी अब अनुशासन में पीएचडी कर चुका है। और इस चमत्कार के सूत्रधार कप्तान चारू निगम जिनकी फुर्ती ऐसी कि क्राइम स्पॉट उन्हें बुलाने का इंतज़ार नहीं करता, बल्कि खुद शर्मिंदा हो जाता है। मौके पर पहुंचना, खुद जांच करना, और फिर मीडिया को ऐसे ब्रीफ करना जैसे सब कुछ पहले से स्क्रिप्टेड हो कोई आम बात नहीं, ये स्टाइल" है। वैसे सुल्तानपुर की पुरानी परंपरा भी कम दिलचस्प नहीं रही जब-जब जिले में मजबूत कप्तान और प्रशासनिक पकड़ देखने को मिली, तब-तब जिले ने भी "अंडर कंट्रोल" होने का संस्कार दिखाया। फर्क सिर्फ इतना है कि कुछ अफसर फाइलों में नियंत्रण ढूंढते हैं।

यूपी पीसीएस में 16वीं रैंक प्राप्त शिवांकी दूबे का विद्यालय में भव्य स्वागत

आर्यावर्त संवाददाता

लंभुआ/सुल्तानपुर। शनिवार को स्वामी विवेकानंद इंटर कॉलेज, गोपालपुर मधैया में उस समय गर्व और उत्साह का माहौल बन गया जब उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (यूपी पीसीएस) परीक्षा में 16वीं रैंक प्राप्त करने वाली प्रतिभाशाली छात्रा शिवांकी दूबे प्रातः प्रार्थना सभा के अवसर पर विद्यालय पहुंचीं।

विद्यालय प्रांगण में उनके आगमन पर समस्त विद्यालय परिवार द्वारा ढोल-नगाड़ों, फूल-मालाओं एवं पुष्प वर्षा के साथ भव्य स्वागत किया गया। इस सम्मान से अभिभूत होकर शिवांकी दूबे ने विद्यालय परिवार के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त किया। शिवांकी दूबे पुत्री गौरी शंकर दूबे ग्राम गोपीनाथपुर, ने अपनी इस सफलता का श्रेय विद्यालय के प्रधानाचार्य विजय शंकर शुक्ल एवं सभी गुरुजनों के मार्गदर्शन को दिया।

उन्होंने अपने छात्र जीवन के अनुभव साझा करते हुए विद्यार्थियों को कठिन परिश्रम, अनुशासन एवं लक्ष्य के प्रति समर्पण का संदेश दिया।उन्होंने बताया कि उन्होंने वर्ष 2012 में हाई स्कूल तथा 2014 में इंटरमीडिएट की परीक्षा इसी विद्यालय से उत्तीर्ण की थी। तभी से उन्होंने अपने लक्ष्य को निर्धारित कर निरंतर प्रयास करते हुए आज यह महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है।विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं समस्त स्टाफ ने शिवांकी दूबे की इस उपलब्धि पर हर्ष व्यक्त करते हुए इसे विद्यालय एवं जनपद के लिए गौरव का क्षण बताया।

गौरैया के लिए संवेदनशील पहल, कटका क्लब ने लगाए जलपात्र और घोंसले

आर्यावर्त संवाददाता

सुलतानपुर। कटका क्लब सामाजिक संस्था द्वारा उमरी (नगरहवा) सुदनापुर बाजार में "गौरैया आओ मेरे देश" अभियान के अंतर्गत पक्षियों के संरक्षण हेतु एक सराहनीय पहल की गई। अभियान के तहत बाजार क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर पक्षियों के लिए जलपात्र स्थापित किए गए तथा उनके रहने के लिए घोंसलों की भी व्यवस्था की गई। कार्यक्रम का नेतृत्व विभु शुक्ल ने किया। इस अवसर पर संस्था के प्रदेश प्रभारी डॉ. ऋषभदेव शुक्ला ने कहा कि आधुनिक जीवनशैली और पर्यावरणीय असंतुलन के कारण गौरैया जैसे छोटे पक्षियों की संख्या लगातार घट रही है। ऐसे में यह अभियान न केवल जागरूकता फैलाने का कार्य कर रहा है, बल्कि लोगों को पक्षी संरक्षण के प्रति प्रेरित भी कर रहा है। संस्था के अध्यक्ष डॉ. सौरभ मिश्र 'विनम्र' ने लोगों से अपील की कि वे अपने घरों एवं आसपास के क्षेत्रों में जलपात्र अवश्य रखें और पक्षियों के लिए सुरक्षित व अनुकूल वातावरण बनाने में सहयोग करें। इस दौरान उपस्थित लोगों ने पर्यावरण संरक्षण एवं पक्षियों को बचाने का संकल्प लिया और संस्था के इस प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा की। वही कार्यक्रम के दौरान बृजेंद्र मिश्र,रवि शंकर शुक्ल,राघवेन्द्र शुक्ला,सौम्य शुक्ला,डॉ शिखा शुक्ला, श्रेया शुक्ला,श्रीमती राजकुमारी शुक्ला, सुशांत शुक्ला, शुभांशी शुक्ला, शौर्य शुक्ला, तेजस्व शुक्ला आदि लोग उपस्थित रहे।

बेटी की लाश के साथ सोता था पिता, 5 महीने तक बदबू छिपाने के लिए छिड़कता रहा परफ्यूम, कैसे खुला राज ?

आर्यावर्त संवाददाता

मेरठ। यूपी के मेरठ जिले से एक बेहद सनसनीखेज और दिल दहला देने वाला मामला सामने आया है। सदर थाना क्षेत्र में एक पिता अपनी मृत बेटी के शव के साथ करीब पांच महीने तक घर में सोता रहा। इतना ही नहीं, आसपास के लोगों को भनक न लगे, इसके लिए वह रोजाना कई बार कमरे में परफ्यूम छिड़ककर बदबू को दबाने की कोशिश करता रहा।

बदबू मिटाने के लिए करता था परफ्यूम का इस्तेमाल

पूछताछ में मृतका के पिता ने चौंकाने वाला खुलासा करते हुए बताया कि बेटी की मौत के बाद वह उसके शव के साथ ही सोता था। घर में फैलने वाली बदबू को छिपाने के लिए वह रोज कई बार परफ्यूम का इस्तेमाल करता था। घर से परफ्यूम की कई बोतलें भी बरामद की गई हैं। पुलिस के अनुसार, कुछ समय के लिए पिता हरिद्वार भी चला गया था। वापस लौटने पर शव पूरी तरह गल चुका था। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। साथ ही पिता को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। डिप्टी एसपी नवीन शुक्ला ने बताया कि शव अत्यधिक सड़ी-गली अवस्था में मिला है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद मौत के सही कारणों का खुलासा हो सकेगा। मृतका के पिता ने मौत किसी बीमारी से होने का दावा किया है।

पुलिस को इस पूरे मामले की जानकारी डायल 112 के जरिए मिली। सूचना पर जब पुलिस मौके पर पहुंची तो घर के अंदर बेटी का शव पूरी तरह सड़ चुका था और केवल कंकाल ही बचा था।

जानकारी के मुताबिक, सदर थाना क्षेत्र में रहने वाले बंगाल मूल के उदय भानु बिस्वास अपनी बेटी प्रियंका बिस्वास के साथ रहते थे। प्रियंका पेशे से शिक्षिका थी। शुरूआती जांच में उदय ने पुलिस को बताया कि उसके बेटी की मौत करीब पांच महीने पहले किसी बीमारी के कारण कारण हुई थी।

बताया जा रहा है कि प्रियंका की मां ने भी काफी समय पहले आत्महत्या कर ली थी। इसके बाद से वह काफी शांत और अकेली रहने लगी थी। हालांकि रिश्तेदारों का आना-जाना बना हुआ था।

रिश्तेदारों से बोलता था- बेटी देहरादून में कर रही नौकरी

रिश्तेदारों ने बताया कि पिछले कई महीनों से प्रियंका उनसे नहीं मिली थी। जब भी उसके बारे में उदय से पूछा जाता, वह अलग-अलग बहाने बनाता और कहता कि प्रियंका देहरादून में नौकरी कर रही है और वहीं रह रही है।

कैसे खुला राज?

लगातार टालमटोल जवाब मिलने पर रिश्तेदारों को शक होने लगा। शुक्रवार देर शाम जब प्रियंका का चचेरा भाई सहित कई रिश्तेदार घर पहुंचे और सख्ती से पूछताछ की, तब उदय ने बताया कि प्रियंका की मौत हो चुकी है और शव घर के अंदर ही है। उसके बाद रिश्तेदारों ने इसकी सूचना पुलिस को दी।

कबाड़ी को बेच रहे पुराना मोबाइल तो हो जाएं सावधान, साइबर ठगी में हो रहा इस्तेमाल, 20 अरेस्ट

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

कानपुर। साइबर अपराधों को लेकर कानपुर पुलिस ने एक चौंकाने वाला खुलासा किया है। पुलिस के मुताबिक, साइबर ठग अब कबाड़ हो चुके पुराने मोबाइल फोन को ही अपने अपराध का हथियार बना रहे हैं। ऐसे में अगर आपके घर में पुराने या खराब मोबाइल पड़े हैं, तो उन्हें बेचने या कबाड़ी को देने से पहले सतर्क होना बेहद जरूरी है।

पुलिस के मुताबिक, मोहल्लों में फेरी लगाकर पुराने सामान के बदले बर्तन या अन्य चीजें देने वाले कबाड़ी इन खराब मोबाइलों को इकट्ठा करते हैं। बाद में ये मोबाइल एक संगठित साइबर ठगी गिरोह तक पहुंचाए जाते हैं। ठग इन कबाड़ फोन से काम के पार्ट्स निकालकर कस्टमाइज्ड मोबाइल तैयार करते हैं, जिनका इस्तेमाल साइबर फ्रॉड में किया जाता है।

कानपुर पुलिस ने हाल ही में ऐसे करीब 20 साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया है। इनके पास से 17 एंड्रॉयड फोन, 4 कीपैड फोन और अन्य इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस बरामद हुए। जांच के दौरान यह पाया गया कि इन डिवाइस में से अधिकांश पुराने और कबाड़ मोबाइलों के पार्ट्स से तैयार किए गए थे। यही नहीं, इन फोन की मेमोरी से पुराना डेटा भी रिकवर किया जा सकता था, जिससे लोगों की निजी जानकारी खतरे में पड़ सकती है।

पुलिस अधिकारियों के अनुसार, इन कस्टमाइज्ड फोन को तैयार करने के बाद कुछ एजेंट इन्हें साइबर ठगों तक पहुंचाते थे। इनकी कीमत 5 हजार से लेकर 50 हजार रुपये तक होती थी। ठग इन फोन का इस्तेमाल कर लोगों को कॉल, मैसेज या अन्य डिजिटल माध्यमों से निशाना बनाते थे।

क्या बोले अधिकारी?

एडीसीपी सुमित रामटेके के मुताबिक, इस पूरे नेटवर्क में इस्तेमाल होने वाले ज्यादातर मोबाइल कबाड़ के पार्ट्स से तैयार किए गए थे। उन्होंने लोगों से अपील की है कि वे अपने पुराने मोबाइल फेरी वालों या कबाड़ी को देने से बचें या फिर पूरी सावधानी बरतें। साइबर विशेषज्ञों का कहना है कि पुराने मोबाइल की मेमोरी में अक्सर डेटा सुरक्षित रह जाता है, जिसे तकनीकी तरीकों से दोबारा हासिल किया जा सकता है। ठग इसी डेटा का इस्तेमाल कर लोगों को ब्लैकमेल करने या ठगी का जाल बिछाने में करते हैं।

विशेषज्ञ अमित शर्मा के अनुसार, साइबर अपराधी इन कस्टम फोन में वीपीएन और ऐसे ऐप्स का इस्तेमाल करते हैं जो वर्चुअल मोबाइल नंबर उपलब्ध कराते हैं। इससे उनकी असली लोकेशन का पता लगाना बेहद मुश्किल हो जाता है। इसके अलावा, कुछ डिवाइस में एक साथ कई सिम कार्ड लगाने की सुविधा होती है, जिससे IMEI नंबर को ट्रेस करना भी चुनौतीपूर्ण बन जाता है।

ऐसे में जरूरी है कि पुराने मोबाइल को देने से पहले उसे पूरी तरह फॉर्मेट करें, सभी अकाउंट्स से लॉगआउट करें, एसडी कार्ड निकाल लें और निजी डेटा को स्थायी रूप से डिलीट कर दें, ताकि आपकी जानकारी गलत हाथों में न पहुंचे।

परमात्मा अदृष्य होते हुए भी प्रत्येक जीव में विद्यमान है : श्याम सारथी जी

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

सुल्तानपुर। जिले के बल्दीराय तहसील क्षेत्र अंतर्गत बरसावां गांव में चल रही श्रीमद्भागवत कथा के दूसरे दिन कथा यजमान सरस्वती शुक्ला एवं राम मनोरथ शुक्ल के निज आवास पर भक्ति और आध्यात्मिकता का अद्भुत माहौल देखने को मिला। अयोध्या धाम से पधारे कथावाचक श्याम सारथी जी महाराज ने शुकदेव जी के जन्म प्रसंग का अत्यंत मार्मिक और भावपूर्ण वर्णन किया।

उन्होंने कहा कि कलयुग में श्रीमद्भागवत महापुराण कल्पवृक्ष से भी श्रेष्ठ है, जो अर्थ, धर्म, काम के साथ-साथ भक्ति और मुक्ति प्रदान कर जीव को परम पद तक पहुंचाती है। यह केवल एक ग्रंथ नहीं, बल्कि साक्षात भगवान श्रीकृष्ण का स्वरूप है, जिसके प्रत्येक अक्षर में ईश्वर का वास है। महाराज ने बताया कि भागवत कथा का श्रवण दान, व्रत और तीर्थ से भी बढ़कर है। इसके ध्यानपूर्वक श्रवण और आत्मसात करने से धुंधकारी जैसे महापापी का भी उद्धार संभव है। उन्होंने कहा कि मनुष्य से गलती होना स्वाभाविक है, लेकिन समय रहते सुधार न करना उसे पाप की श्रेणी में ले जाता है। कथा के दौरान राजा परीक्षित को मिले श्राप का प्रसंग सुनाते हुए उन्होंने बताया कि जब उन्हें सातवें दिन सर्पदंश से मृत्यु का ज्ञान हुआ, तो उन्होंने मोह त्यागकर भगवान की शरण ग्रहण की। शुकदेव जी से भागवत कथा का श्रवण ही उनके उद्धार का माध्यम बना। उन्होंने यह भी कहा कि केवल कथा सुनना पर्याप्त नहीं, बल्कि श्रोता के भीतर जिज्ञासा और श्रद्धा होना आवश्यक है। परमात्मा अदृश्य होते हुए भी प्रत्येक जीव में विद्यमान है। कथा के समापन पर भागवत भगवान एवं व्यास पीठ की विधिवत आरती उतारी गई तथा श्रद्धालुओं में प्रसाद वितरित किया गया।

होमियोशक्ति कार्यक्रम में डॉ. अशर अली खान को 'लीजेंड अवार्ड'

पिहू द्विवेदी ने दी होम्योपैथिक एंथम पर नृत्य प्रस्तुति

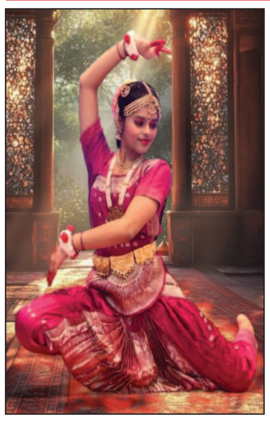

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। अटल बिहारी बाजपेयी ऑडिटोरियम, KGMU, लखनऊ में भव्य 'होमियोशक्ति' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विश्व होम्योपैथी दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित इस समारोह में होम्योपैथी जगत की नामचीन हस्तियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण प्रसिद्ध सर्जन डॉ.अशर अली खान को ऑर्थोपेडिक के क्षेत्र में उनके विशेष योगदान के लिए 'लीजेंड अवार्ड' से सम्मानित किया जाना रहा। डॉ. खान को यह सम्मान मुख्य अतिथि उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक द्वारा प्रदान किया गया। अपने संबोधन में डॉ. खान ने कहा कि आधुनिक चिकित्सा और होम्योपैथी साथ मिलकर रोगियों को बेहतर स्वास्थ्य दे सकते हैं। इस अवसर पर पिहू द्विवेदी ने 'होम्योपैथिक एंथम' पर मनमोहक नृत्य प्रस्तुति दी। उनकी भावपूर्ण प्रस्तुति ने पूरे सभागार को तालियों से गूंजा दिया और होम्योपैथी के संदेश को कला के माध्यम से जीवंत कर दिया।

लखीमपुर खीरी में मुख्यमंत्री ने 817 करोड़ की 314 परियोजनाओं का लोकार्पण-शिलान्यास किया

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को लखीमपुर खीरी के लोगों को बड़ी सौगात देते हुए चंदन चौकी (पलिया) में आयोजित कार्यक्रम में नदियों से भूमि क्षरण से प्रभावित पूर्वी उत्तर प्रदेश के 2350 परिवारों तथा थारू जनजाति के 4356 परिवारों को भौमिक अधिकार पट्टों का वितरण किया। इसके साथ ही पलिया, श्रीनगर, निघासन और गोला गोकर्णनाथ विधानसभा क्षेत्रों की 817 करोड़ रुपये लागत की 314 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास भी किया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने थारू जनजाति के कलाकारों की सांस्कृतिक प्रस्तुति देखी और उनकी संस्कृति को संरक्षित रखने के प्रयासों की सराहना की।मुख्यमंत्री ने कहा कि सच्चा शासन वही होता है जहां जनता सुखी हो और शासन का उद्देश्य जनता-जनार्दन की

खुशहाली सुनिश्चित करना हो। उन्होंने कहा कि जनता ने सरकार को अधिकार दिया है और सरकार जनता को अधिकार पत्र देकर उनके सम्मान और आत्मनिर्भरता की गारंटी दे रही है। यह कार्यक्रम अधिकार से आत्मनिर्भरता और आत्मनिर्भरता से आत्मसम्मान की ऐतिहासिक यात्रा का प्रतीक है।मुख्यमंत्री ने कहा कि दशकों से जिन परिवारों को जमीन पर अधिकार नहीं मिल पाया था, आज उनकी अधूरी यात्रा पूरी हो रही है। उन्होंने कहा कि पूर्वी उत्तर प्रदेश से आए स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के आश्रितों और थारू समाज के लोगों की कई पीढ़ियां बीत गईं, लेकिन उन्हें भूमि का स्वामित्व नहीं मिल सका था। अब 4356 थारू परिवारों को 5338 हेक्टेयर भूमि तथा 2350 परिवारों को 4251 हेक्टेयर भूमि का भौमिक अधिकार प्रदान किया गया है। उन्होंने कहा कि सरकार का उद्देश्य ऐसे लोगों को सम्मान और स्थायित्व देना है, जिन्होंने वर्षों तक संघर्ष किया।मुख्यमंत्री ने कहा कि पहले की सरकारों में संवेदनशीलता का अभाव था और अनेक योजनाएं केवल सीमित क्षेत्रों तक सिमट कर रह जाती थीं, जबकि वर्तमान सरकार प्रदेश के सभी 75 जनपदों में समान रूप से विकास कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री स्वामित्व योजना के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में 'जहां जिसका घर, वहां उसका अधिकार' सुनिश्चित किया जा रहा है, जिससे लोगों को जमीन, नाम, सम्मान और पहचान मिल रही है।कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने किसानों को आश्वस्त करते हुए कहा कि बेमौसम वर्षा और ओलावृष्टि से प्रभावित किसानों के नुकसान का आकलन कराया जा रहा है। फसल बीमा योजना और आपदा राहत कोष के माध्यम से प्रभावित किसानों को सहायता प्रदान की जाएगी तथा जनहानि या पशुहानि की स्थिति में 24 घंटे के भीतर सहायता उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए हैं।मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार थारू समाज को लाभार्थी से उद्यमी बनाने की दिशा में कार्य कर रही है। खीरी में स्थापित थारू हस्तशिल्प कंपनी इसी सोच का उदाहरण है, जिसके माध्यम से स्थानीय उत्पादों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजारों तक पहुंचाया जाएगा। इससे रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और आर्थिक सशक्तीकरण को बढ़ावा मिलेगा।उन्होंने कहा कि लखीमपुर खीरी में गोला गोकर्णनाथ कॉरिडोर का निर्माण कार्य प्रगति पर है और क्षेत्र में औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने के लिए पीएलए प्लांट और प्लास्टिक पार्क की योजनाएं भी विकसित की जा रही हैं। श्रीनगर में मेडिकल कॉलेज की स्थापना, शारदा नदी की ड्रेजिंग तथा एयर कनेक्टिविटी के विस्तार जैसे कार्यों से जिले के सर्वांगीण विकास को गति मिली है।

• संक्षेप •

नारी शक्ति वंदन अधिनियम लोकतंत्र को अधिक समावेशी बनाने की दिशा में ऐतिहासिक कदम: बेबी रानी मौर्य

लखनऊ। भारतीय जनता पार्टी की वरिष्ठ नेत्री एवं उत्तर प्रदेश सरकार में महिला एवं बाल विकास मंत्री बेबी रानी मौर्य ने शनिवार को पार्टी के राज्य मुख्यालय में आयोजित प्रेस वार्ता में "नारी शक्ति वंदन अधिनियम, 2023" को भारत के लोकतांत्रिक इतिहास का एक ऐतिहासिक और युगांतरकारी निर्णय बताया। उन्होंने कहा कि यह अधिनियम महिलाओं को केवल लाभार्थी नहीं, बल्कि नीति निर्माण की प्रक्रिया में सशक्त भागीदार और निर्णयकर्ता बनाने की दिशा में एक निर्णायक कदम है। इस अवसर पर महिला आयोग की अध्यक्ष बबिता चौहान, पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष रंजना उपाध्याय तथा महिला मोर्चा की प्रदेश मंत्री ममता पाण्डेय भी उपस्थित रहीं।बेबी रानी मौर्य ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एनडीए सरकार द्वारा लाया गया यह कानून देश की करोड़ों माताओं, बहनों और बेटियों के सम्मान और अधिकारों का राष्ट्रीय संकल्प है। संसद और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित करने वाला यह संवैधानिक संशोधन लोकतंत्र को अधिक समावेशी, संवेदनशील और प्रभावी बनाएगा।उन्होंने कहा कि भारत में महिलाएं मतदान और विभिन्न सामाजिक-आर्थिक क्षेत्रों में निरंतर आगे बढ़ रही हैं, लेकिन राजनीति में उनका प्रतिनिधित्व अभी भी अपेक्षाकृत कम है। उन्होंने कहा कि भागीदारी बढ़ी है, लेकिन प्रतिनिधित्व संतुलित नहीं है और इसी अंतर को समाप्त करने के लिए यह कानून अत्यंत आवश्यक है।

लखनऊ पुलिस कमिश्नरेट में पैरोकारों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित, 122 पुलिसकर्मियों ने लिया भाग

लखनऊ। उत्तर प्रदेश शासन एवं पुलिस महानिदेशक के निर्देशों के क्रम में पुलिस कमिश्नरेट लखनऊ द्वारा पैरोकारों के कार्य एवं कर्तव्यों के संबंध में एक विशेष प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन शनिवार को रिजर्व पुलिस लाइन्स स्थित संगोष्ठी सदन में किया गया। कार्यक्रम पुलिस आयुक्त अमरेन्द्र कुमार सेंगर के निर्देशन में आयोजित हुआ।यह प्रशिक्षण संयुक्त पुलिस आयुक्त (अपराध एवं मुख्यालय) अपर्णा कुमार, संयुक्त पुलिस आयुक्त (कानून एवं व्यवस्था) बबलू कुमार तथा पुलिस उपायुक्त (मुख्यालय) अमित कुमावत के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। कार्यशाला का संचालन सहायक पुलिस आयुक्त (महिला अपराध/ट्रेनिंग सेल) सौम्या पाण्डेय के पर्यवेक्षण में किया गया।पुलिस कमिश्नरेट लखनऊ के अंतर्गत प्रशिक्षण व्यवस्था को सुदृढ़ और प्रभावी बनाने के उद्देश्य से आयोजित इस कार्यशाला में विभिन्न थाना एवं इकाइयों से कुल 122 पुलिसकर्मियों ने प्रतिभाग किया। प्रशिक्षण सत्र को सुव्यवस्थित ढंग से संचालित करते हुए आधुनिक तकनीकी संसाधनों और उन्नत प्रशिक्षण पद्धतियों का प्रभावी उपयोग किया गया।प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षक प्रत्यूष दुबे, पीओ, कमिश्नरेट लखनऊ ने समस्त पैरोकारों को उनके कार्य एवं कर्तव्यों के संबंध में विस्तृत जानकारी दी।

अम्बेडकर जयंती व स्थापना दिवस समारोह का चार दिवसीय आयोजन प्रारम्भ

लखनऊ। बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय द्वारा 11 से 14 अप्रैल तक चार दिवसीय 'अम्बेडकर जयंती' एवं 'विश्वविद्यालय स्थापना दिवस समारोह' के अंतर्गत विभिन्न शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों, संगोष्ठियों तथा प्रतियोगिताओं की श्रृंखला का शुभारंभ 11 अप्रैल को कुलपति प्रो. राज कुमार मित्तल द्वारा किया गया।समारोह के प्रथम दिवस महात्मा ज्योतिबा फुले जयंती के अवसर पर 'शिक्षा ही समावेशी विकास का आधार: महात्मा ज्योतिबा फुले की दृष्टि में' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व राज्य मंत्री, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार डॉ. संजय पासवान उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. राज कुमार मित्तल ने की, जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में सावित्रीबाई फुले विश्वविद्यालय, पुणे के हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. सदानंद के. भोंसले उपस्थित रहे। आयोजन समिति की अध्यक्ष प्रो. शूरा दारापुरी तथा वक्ता प्रो. एम. रवि कुमार भी मंच पर मौजूद रहे।

विश्व होम्योपैथी दिवस पर भव्य आयोजन एवं दीक्षांत समारोह का हुआ आयोजन

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। राजकीय नेशनल होम्योपैथिक चिकित्सा महाविद्यालय एवं अस्पताल, गोमती नगर में विश्व होम्योपैथी दिवस के अवसर पर शुक्रवार को भव्य एवं गरिमामय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन में करीब 1000 से अधिक प्राचार्य, शिक्षक, चिकित्सक, छात्र-छात्राएं एवं होम्योपैथी प्रेमियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन के साथ हुई। इसके बाद छात्रों ने सरस्वती वंदना एवं स्वागत नृत्य प्रस्तुत कर वातावरण को सांस्कृतिक रंग प्रदान किया।

इस अवसर पर विधान परिषद सदस्य अवनीश सिंह, प्रो.डॉ. बी.एन. सिंह (पूर्व अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश होम्योपैथिक मेडिसिन बोर्ड), डॉ. प्रमोद कुमार सिंह (निदेशक होम्योपैथी), डॉ. एस.एम. सिंह (अध्यक्ष, पीजी इंस्टीट्यूट ऑफ होम्योपैथी, प्रयागराज), डॉ. विक्रम प्रसाद तथा जितेंद्र सिंह सहित कई वरिष्ठ चिकित्सक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान महाविद्यालय की पत्रिका 'जागृति' (वॉल्यूम-4) का विमोचन भी किया गया।

प्राचार्य डॉ. विजय पुष्कर ने अपने स्वागत संबोधन में महाविद्यालय की शैक्षणिक उत्कृष्टता, अनुसंधान गतिविधियों और प्रदेश में होम्योपैथी के प्रसार में इसकी भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने संस्थान की उपलब्धियों एवं भविष्य की योजनाओं की जानकारी देते हुए अतिथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण पोस्टग्रेजुएट (2022 बैच) के 23 छात्र-छात्राओं का दीक्षांत समारोह रहा, जिसमें सफल विद्यार्थियों को उपाधि प्रदान की गई।

वैज्ञानिक सत्र में विशेषज्ञों ने होम्योपैथी के सिद्धांतों एवं उपयोगिता पर चर्चा की। प्रो. डॉ. एस.एन. सिंह ने 'इंडिविजुअलाइजेशन' एवं 'लॉ ऑफ मिनिमम डोज' जैसे मूल सिद्धांतों की व्याख्या करते हुए जटिल रोगों के सफल उपचारों के उदाहरण प्रस्तुत किए। वहीं अश्विनी सिंह पटेल ने कहा कि होम्योपैथी एक ऐसी पद्धति है, जो रोगी का विश्वास जीतकर स्थायी लाभ प्रदान करती है।

प्रो. डॉ. बी.एन. सिंह ने अपने संबोधन में संस्थान की सराहना करते हुए इसे प्रदेश ही नहीं, बल्कि देश के प्रमुख होम्योपैथी संस्थानों में से एक बताया। वहीं प्रो. डॉ. डी.के. सोनकर ने संस्थान के इतिहास और उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने दर्शकों का मन मोह लिया। अंत में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। आयोजन के समापन पर महाविद्यालय परिवार ने सभी अतिथियों, प्रतिभागियों एवं सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

सीएम डैशबोर्ड की मार्च रैंकिंग में हमीरपुर प्रथम, बरेली द्वितीय और रामपुर तृतीय स्थान पर

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश पिछले नौ वर्षों से समग्र विकास की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। इस दौरान प्रदेश में बुनियादी सुविधाओं का विस्तार होने के साथ समाज के हर वर्ग के उत्थान को भी सुनिश्चित किया जा रहा है। मुख्यमंत्री की योजनाओं और विकास कार्यों की प्रभावी निगरानी में सीएम डैशबोर्ड अहम भूमिका निभा रहा है। इसके माध्यम से जनसुनवाई, जनकल्याणकारी योजनाओं तथा राजस्व कार्यों की लगातार समीक्षा की जा रही है, जिससे जिलों को बेहतर प्रशासनिक मानक स्थापित करने में मदद मिल रही है।इसी क्रम में सीएम डैशबोर्ड की मार्च माह की रिपोर्ट में प्रदेशभर में हमीरपुर ने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए पहला स्थान प्राप्त किया है, जबकि बरेली दूसरे और रामपुर तीसरे स्थान पर रहा है।

एसकेडी एकेडमी ई-ब्लॉक के विद्यार्थियों ने योगासन में जीते 8 पदक, विद्यालय का बढ़ाया गौरव

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। एसकेडी एकेडमी, ई-ब्लॉक राजाजीपुरम के विद्यार्थियों ने योगासन खेल संस्थान उत्तर प्रदेश द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर 3 स्वर्ण, 3 रजत और 2 कांस्य पदक जीतकर विद्यालय का नाम रोशन किया। छोटे वर्ग में कक्षा 1ए के प्रज्ञान शर्मा ने स्वर्ण, राघव शर्मा और दक्षित श्रीवास्तव ने रजत पदक हासिल किया। कक्षा 2ए के कियान्श श्रीवास्तव को कांस्य पदक मिला। उप कनिष्ठ वर्ग में कक्षा 3बी के समर्थ गुप्ता ने स्वर्ण, ओजस्व मौर्य ने रजत और कक्षा 5ए की सान्वी श्रीवास्तव ने कांस्य पदक जीता। कनिष्ठ वर्ग में कक्षा 8ए की आराधिका श्रीवास्तव ने स्वर्ण पदक पर कब्जा जमाया। एसकेडी शिक्षा समूह के निदेशक श्री मनीष सिंह ने सभी विजेताओं को बधाई देते हुए कहा, 'यह सफलता विद्यार्थियों की मेहनत और अनुशासन का परिणाम है। योगासन शरीर को सशक्त बनाने के साथ मानसिक एकाग्रता और भीतरी संतुलन भी देता है।' प्रधानाचार्या श्रीमती शैली श्रीवास्तव ने भी विद्यार्थियों की उपलब्धि पर प्रसन्नता जताई और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। विद्यालय पढ़ाई के साथ खेल और योग को समान महत्व देकर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर जोर देता है।

खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र किसानों की आय बढ़ाने और रोजगार सृजन का सशक्त माध्यम : केशव प्रसाद मौर्य

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा है कि खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र किसानों की आय बढ़ाने, उद्यमिता को प्रोत्साहित करने तथा युवाओं के लिए व्यापक रोजगार सृजन का सशक्त माध्यम बनकर उभर रहा है। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि उत्तर प्रदेश खाद्य प्रसंस्करण उद्योग नीति-2023 के अंतर्गत उपलब्ध सुविधाओं, अनुदानों और प्रावधानों के बारे में व्यापक स्तर पर जन-जागरूकता सुनिश्चित की जाए, ताकि अधिकाधिक उद्यम स्थापित हो सकें।उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार खाद्य प्रसंस्करण को बढ़ावा देकर किसानों के उत्पादों को बेहतर मूल्य दिलाने के लिए प्रतिबद्ध है। विकसित भारत के निर्माण में खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका होगी और इस दिशा में विभाग द्वारा प्रभावी कदम

तेजी से उठाए जा रहे हैं।इसी क्रम में अपर मुख्य सचिव, उद्यान एवं खाद्य प्रसंस्करण बी. एल. मीणा की अध्यक्षता में शुक्रवार को खाद्य प्रसंस्करण निदेशालय, लखनऊ में अप्रेज़ल समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में प्री-अप्रेज़ल समिति द्वारा संस्तुत 14 नवीन तथा एक पूर्व में स्थगित प्रस्ताव सहित कुल 15 प्रस्ताव विचारार्थ प्रस्तुत किए गए, जिनमें से 13 प्रस्तावों को राज्य स्तरीय समिति के समक्ष अनुमोदन के लिए संस्तुति प्रदान की गई।स्वीकृति के लिए संस्तुत प्रमुख इकाइयों में बिस्कुट एवं टॉफी हेतु स्टार्च इकाई, मैकरोनी, पास्ता एवं नूडल्स निर्माण इकाई, पोल्ट्री फीड यूनिट, चिकोरी पाउडर एवं एक्सट्रैक्ट इकाई, डेयरी उत्पाद विस्तार, सोलर पावर प्लांट, बेकरी उत्पाद इकाई, मॉरिंगा उत्पाद निर्माण तथा तिलहन एवं दाल प्रसंस्करण इकाइयाँ शामिल हैं।अप्रेज़ल समिति द्वारा निर्देशित किया गया कि कच्चे माल की आपूर्ति प्राथमिकता के आधार पर स्थानीय कृषकों एवं दुग्ध उत्पादकों से सुनिश्चित की जाए। संबंधित इकाइयों को प्लान मैप, अग्निशमन तथा प्रदूषण नियंत्रण प्रमाण पत्र सक्षम प्राधिकारी से प्राप्त करना अनिवार्य होगा। जहां लागू हो, वहां 100 स्थानीय कृषकों या उत्पादकों से कच्चा माल आपूर्ति की सूची स्टाम्प पेपर पर उपलब्ध करानी होगी। कार्यरत इकाइयों को 85 प्रतिशत उत्पादन क्षमता उपयोग का प्रमाण तथा विगत दो वर्षों के आयकर एवं जीएसटी रिटर्न की प्रमाणित प्रतियां प्रस्तुत करनी होंगी।बैठक में खाद्य प्रसंस्करण नीति-2023 के अंतर्गत चिन्हित कार्यक्षेत्रों के पुनर्संरचना और संशोधन पर भी विचार किया गया।

रेस्पिवॉक कॉन्फ्रेंस में चार कार्यशालाओं का हुआ सफल आयोजन

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। किंग जॉर्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय के रेस्पिरेटरी मेडिसिन विभाग द्वारा आयोजित रेस्पिवॉक कॉन्फ्रेंस का आज शानदार शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम के मुख्य सूत्रधार डॉ. सूर्यकान्त ने बताया कि इस शैक्षणिक महाकुंभ में देशभर के विभिन्न एम्स एवं चिकित्सा संस्थानों से लगभग 300 पल्मोनोलॉजिस्ट, जनरल फिजिशियन, क्रिटिकल केयर विशेषज्ञ, पीजी रेजिडेंट्स एवं फिजियोथेरेपिस्ट ने प्रतिभाग कर कॉन्फ्रेंस को सफल बनाया।

इस संदर्भ में डॉ. सोनिया नित्यानन्द ने कहा कि प्रभावी रोग नियंत्रण के लिए चिकित्सकों को सतत प्रशिक्षण और अद्यतन ज्ञान से लैस रहना चाहिए। रोगों से निपटने के लिए प्रशिक्षण और नई तकनीकों का उपयोग अत्यंत आवश्यक है। आधुनिक चिकित्सा में उन्नत तकनीकों को अपनाने से न केवल रोगों की शीघ्र और सटीक पहचान

संभव होती है, बल्कि उपचार की गुणवत्ता में भी उल्लेखनीय सुधार आता है। उन्होंने यह भी कहा कि निरंतर नवाचार और तकनीकी प्रगति से चिकित्सा प्रणाली अधिक सशक्त और प्रभावी बनती है। सम्मेलन के आयोजक डॉ. सूर्यकान्त ने बताया कि सम्मेलन के प्रथम दिवस पर विभिन्न विषयों पर चार वर्कशॉप आयोजित की गईं, जिनमें पल्मोनरी रिहैबिलिटेशन, मैकेनिकल वेंटिलेशन, इंटरस्टिशियल लंग डिजीज (आईएलडी) और स्लीप मेडिसिन शामिल हैं। इनमें से दो वर्कशॉप रेस्पिरेटरी मेडिसिन विभाग में आयोजित की गईं। पल्मोनरी रिहैबिलिटेशन वर्कशॉप का आयोजन विभाग से डॉ. संतोष कुमार एवं एस.एन. मेडिकल कॉलेज, आगरा से डॉ. गजेंद्र विक्रम सिंह के निर्देशन में सम्पन्न हुआ तथा मैकेनिकल वेंटिलेशन वर्कशॉप का आयोजन विभाग से डॉ. राजीव गर्ग एवं डॉ. ज्योति बाजपेयी के साथ चरक हॉस्पिटल, लखनऊ से डॉ. राघवेंद्र वग्यन्नावर एवं आरएमएल, लखनऊ के एनेस्थीसियोलॉजी विभाग से डॉ. पी.के. दास व गर्वन्मेन्ट इंस्ट्टीयूट आफ मेडिकल सांइसेज के मार्गदर्शन में किया गया। रेस्पिरेटरी मेडिसिन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. सूर्यकान्त ने बताया कि इस वर्कशॉप में क्रॉनिक रेस्पिरेटरी डिजीज में पल्मोनरी रिहैबिलिटेशन की आवश्यकता एवं महत्व, उपयुक्त मरीज चयन, बेसलाइन असेसमेंट एवं व्यक्तिगत उपचार योजना तैयार करने जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई। इसके साथ ही सार्कोपीनिया के प्रभाव, पोस्ट-टीबी सीक्वेली के प्रबंधन तथा मानसिक स्वास्थ्य एवं मनोवैज्ञानिक सहयोग की भूमिका को भी विस्तार से समझाया गया। वर्कशॉप के दौरान प्रतिभागियों को हैंड्स-ऑन सत्रों के माध्यम से 6 मिनट वॉक टेस्ट, श्वास संबंधी व्यायाम, एयरवे क्लीयरेंस तकनीक, मसल ट्रेनिंग तथा पोषण संबंधी परामर्श का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। विभाग का पल्मोनरी रिहैबिलिटेशन सेंटर उत्तर प्रदेश का पहला ऐसा केंद्र है, जहाँ अब तक लगभग 3000 श्वसन रोगियों को पल्मोनरी रिहैबिलिटेशन की सुविधा निःशुल्क प्रदान की गई है। पल्मोनरी रिहैबिलिटेशन के संस्थापक प्रभारी डॉ. सूर्यकान्त एवं सह-प्रभारी डॉ. अंकित कुमार ने बताया कि इस वर्कशॉप के प्रतिभागियों की विशेष मांग पर देश का पहला पल्मोनरी रिहैबिलिटेशन प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किया जाएगा, जहाँ देश भर के श्वसन रोग विशेषज्ञों व फिजियोथेरेपिस्ट को प्रशिक्षण दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि इसमें मैकेनिकल वेंटिलेशन के मूल सिद्धांत, वेंटिलेशन की शुरुआत, विभिन्न वेंटिलेटर मोड्स (बेसिक एवं एडवांस्ड), वेंटिलेटरी ग्राफ्स (स्केलर एवं लूप्स) की व्याख्या तथा वीएनिंग की रणनीतियों पर विस्तृत चर्चा की गई। इसके अतिरिक्त नॉन-इनवेसिव वेंटिलेशन (एनआईवी) एवं हाई-फ्लो नेजल कैन्युला (एचएफएनसी) के उपयोग, संकेत एवं सीमाओं को भी स्पष्ट किया गया।

डॉ. सूर्यकान्त ने बताया कि दो वर्कशॉप रेस्पिवॉक कॉन्फ्रेंस के अंतर्गत उनके नेतृत्व में डॉ. राम मनोहर लोहिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, लखनऊ में आयोजित की गईं। जिसका आयोजन डॉ. राम मनोहर लोहिया (आरएमएल) के रेस्पिरेटरी मेडिसिन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अजय कुमार वर्मा एवं संजीवनी हॉस्पिटल, लखनऊ से डॉ. एस.एन. गुप्ता द्वारा इंटरस्टिशियल लंग डिजीज (आईएलडी) वर्कशॉप के रूप में किया गया। इसमें रेडियोलॉजिकल इंटरप्रिटेशन, रुमेटोलॉजिकल रोगों से संबंधित आईएलडी तथा रोग के विभिन्न फेनोटाइप्स पर प्रशिक्षण दिया गया। हैंड्स-ऑन एवं केस-आधारित सत्रों में प्रतिभागियों को केस के माध्यम से आईएलडी की पहचान, रोग की प्रगति का आकलन एवं उपचार रणनीति विकसित करने का भी प्रशिक्षण दिया गया। उसके उपरान्त स्लीप स्टडी वर्कशॉप का आयोजन एडिशनल प्रोफेसर, आरएमएल से डॉ. हेमंत कुमार एवं निदेशक, स्लम्बर स्कोर इंस्टीट्यूट ऑफ स्लीप एजुकेशन से डॉ. स्वेता कंचन द्वारा सम्पन्न कराया गया।

डॉ. सूर्यकान्त ने वर्कशॉप में इंटरस्टिशियल लंग डिजीज (आईएलडी) पर प्रशिक्षण देते हुए इसके कारण, लक्षण और उपचार की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सही पहचान हेतु मरीज का विस्तृत इतिहास, शारीरिक परीक्षण, चेस्ट एक्स-रे, सीटी स्कैन तथा फेफड़ों की कार्यक्षमता जांच आवश्यक हैं। आईएलडी को नॉन-आईपीएफ और इडियोपैथिक पल्मोनरी फाइब्रोसिस (आईपीएफ) में बांटा जाता है। आईपीएफ में बिना कारण फेफड़ों में सिकुड़न आ जाती है, जिससे कार्यक्षमता घटती है। शुरुआत सूखी खांसी से होती है, बाद में सांस फूलने लगती है और गंभीर अवस्था में फेफड़े "हनीकॉम्ब" जैसे दिखते हैं।

स्नोरिंग एण्ड स्लीप रेलेटेड डिसआडर्स सोसाइटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा0 सूर्यकान्त ने बताया कि देश में 40 प्रतिशत पुरूष, 20 प्रतिशत महिलाएं व 10 प्रतिशत बच्चे खर्राटे लेते हैं और लगभग 10 कारोड़ लोग ऑब्सट्रक्टिव स्लीप एपनिया के शिकार हैं। ऐसे लोगों को नींद बहुत आती है और वे वाहन चलाते चलाते सो जाते है व एक्सीडेन्ट कर बैठते है। साथ ही ऐसे लोगो को बहुत सी बीमारियां जैसे डायबटीज, बीपी, हार्ट अटैक, स्ट्रोक आदि का खतरा भी ज्यादा रहता है। साथ ही उन्होंने बताया कि स्लीप एपनिया एवं अन्य स्लीप विकारों की पैथोफिजियोलॉजी, क्लिनिकल स्पेक्ट्रम, जोखिम कारक एवं जटिलताओं को विस्तार से समझाया गया। इसके साथ ही पॉलीसोमनोग्राफी (स्लीप स्टडी) के सेटअप, सिग्नल क्वालिटी एवं एएएसएम मानकों के अनुसार स्लीप स्टडी की व्याख्या पर विशेष ध्यान दिया गया। हैंड्स-ऑन सत्रों के माध्यम से प्रतिभागियों को स्लीप स्टडी सेटअप, स्कोरिंग, इवेंट एनालिसिस एवं रिपोर्ट इंटरप्रिटेशन का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

कहां गए शांति के कपोत उड़ाने वाले?

आज की दुनिया बारूद से धधक रही है। रूस-यूक्रेन से लेकर मध्य पूर्व के रेगिस्तानों तक, हर तरफ मिसाइलों की गूँज है। शांति की बाते अब सुनाई नहीं देतीं। शांति के कपोत उड़ाने वाले दिखाई देने बंद हो गए। युद्ध की विभिषिका के विरोध में प्रदर्शन करने और मोमबत्ती जलाने वाले अब सड़कों से गायब है। युद्ध के विरोध के स्वर धीमे ही नही हुए, पूरी तरह खामोश हो गए। बुद्ध के संदेश अब किताबों में ही बंद होकर रह गए है। युद्धों के विरोध की कही से बात नही उठ रही। दुनिया में शांति स्थित करने के लिए बने संयुक्त राष्ट्रसंघ के मुंह पर टेप चिपक गया। वह देख सकता है। न कुछ बोल सकता है। न आदेश कर सकता है।

विडंबना देखिए कि इक्कीसवीं सदी में हम मंगल पर बस्तियां बसाने की बात कर रहे हैं, लेकिन ज़मीन के चंद टुकड़ों और आपसी वर्चस्व के लिए हज़ारों बेगुनाहों का खून बहाने से भी पीछे नहीं हट रहे। युद्ध चाहे रूस और यूक्रेन के बीच हो, या इज़राइल, ईरान और अमेरिका के बीच का तनाव हो। जीत के झंडे चाहे जिस देश के हाथ आएं, हारती हमेशा मानवता है। इन युद्ध में विजयी कोई भी हो, सदा पराजित तो मानव होती है। मरती बस इंसानियत है।

इतिहास गवाह है कि युद्ध कभी समस्या का समाधान नहीं रहा, बल्कि यह नई समस्याओं का जन्मदाता है। रूस-यूक्रेन युद्ध के समय भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कई बार कहा कि दुनिया को युद्ध की नहीं, बुद्ध की जरूरत है। कई मंचों से उन्होंने यह मांग उठाई, किंतु किसी भी देश ने शांति का समर्थन नहीं किया। सब देश गूंगे बन कर रह गए। आज भी ये ही हाल है। मरता ईरान खाड़ी के उन देशों पर मिसाइल और ड्रोन दाग कर तबाही मचा रहा है, जिनमे अमेरिका के सैन्य अड्डे हैं। अपनी बरबादी होते देख ये देश ईरान पर अमेरिकी हमलों का उस तरह विरोध नही कर रहे, जिस तरह कि करना चाहिए। रूस-यूक्रेन युद्ध के समय जहाँ वैश्विक अर्थव्यवस्था और ऊर्जा संकट को जन्म दिया तो मध्य पूर्व (इज़राइल-हमास-ईरान) के संघर्ष ने दुनिया को धार्मिक और कूटनीतिक ध्रुवीकरण के मुहाने पर खड़ा कर दिया है। इन लड़ाइयों में टैंकों की गड़गड़ाहट के बीच जो आवाज़ दब जाती है, वह है—एक मासूम बच्चे की चीख और एक बेबस माँ की कराह। युद्ध की सबसे बड़ी कीमत वे लोग चुकाते हैं जिनका राजनीति या सत्ता की लालसा से कोई लेना-देना नहीं होता। यूक्रेन के कीव से लेकर गाज़ा की गलियों और ईरान के गांव तक तक, हज़ारों औरतें और बच्चे मौत की नींद सो चुके हैं। जो उम्र खिलौनों से खेलने की थी, उस उम्र में बच्चे बमों के धमाकों को पहचानना सीख रहे हैं। हज़ारों बच्चे अनाथ हो चुके हैं और लाखों का भविष्य मलबे के नीचे दब गया है। युद्ध के दौरान महिलाओं को न केवल विस्थापन का दंश झेलना पड़ता है, बल्कि वे शारीरिक और मानसिक हिंसा का सबसे आसान लक्ष्य बनती हैं।

युद्ध केवल इंसान को नहीं मारता, वह सदियों से बनी-बनाई सभ्यताओं और बुनियादी ढांचे को भी नष्ट कर देता है। स्कूलों, अस्पतालों और रिहायशी इमारतों पर गिरते बम यह दर्शाते हैं कि आधुनिक समाज कितना ₹असंवेदनशील₹ हो चुका है। जब एक अस्पताल पर मिसाइल गिरती है, तो वह केवल ईंट-पत्थर की इमारत नहीं ढहती, बल्कि इंसानियत की आखिरी उम्मीद भी टूट जाती है। इन लड़ाइयों का असर केवल युद्ध क्षेत्र तक सीमित नहीं है। रूस-यूक्रेन संघर्ष ने दुनिया भर में अनाज की आपूर्ति श्रृंखला को तोड़ दिया। इससे गरीब देशों में भुखमरी का खतरा बढ़ गया। ईंधन की बढ़ती कीमतें और खाद्य पदार्थों की कमी ने आम आदमी की कमर तोड़ दी है। जो खरबों डॉलर शिक्षा, स्वास्थ्य और जलवायु परिवर्तन से लड़ने में खर्च होने चाहिए थे, वे आज आधुनिक हथियार और मिसाइलें बनाने में झोंके जा रहे हैं।

युद्ध का एक और खामोश शिकार हमारा पर्यावरण है। हज़ारों टन गोला-बारूद का इस्तेमाल वायुमंडल को ज़हरीला बना रहा है। जंगलों की आग, समुद्री प्रदूषण और ज़मीन में धंसे बारूदी सुरंग आने वाली कई पीढ़ियों के लिए मौत का जाल बिछा रहे हैं। हम जिस धरती को बचाने की कसमें खाते हैं, उसी को युद्ध की आग में झोंक रहे हैं। संसाधनों को बरबाद कर रहे हैं। जब हम टीवी पर बमबारी के दृश्य देखते हैं और उन्हें केवल एक ₹न्यूज़ अपडेट₹ की तरह छोड़ देते हैं, तो समझ लीजिए कि हमारे भीतर की इंसानियत मर चुकी है। युद्ध हमें क्रूर बना देता है। हम मौतों को केवल 'आंकड़ों' में गिनने लगते हैं। घृणा का यह बीज जो आज बोया जा रहा है, वह भविष्य में और अधिक कट्टरपंथ और आतंकवाद को जन्म देगा। अमेरिका आज दुनिया का सबसे बड़ा तानाशाह बन गया है। उसने इराक पर यह कह कर हमला किया था कि उसके पास कैमिकल और अन्य घातक शस्त्र है। इराक हार गया। सद्दाम हुसैन पकड़े ही नही गए, उन्हें फांसी हो गई, किंतु अमेरिका इराक से कुछ भी बरामद नही कर पाया।

टिप्पणी

ईरान अमेरिका युद्ध में पाकिस्तान की भूमिका दलाल की, ईरान की ओर से युद्ध पर कोई बात नहीं

भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर दिल्ली में 26 मार्च को प्रेस ब्रीफिंग में कहा कि ईरान अमेरिका युद्ध में पाकिस्तान दलाल की भूमिका निभा रहा है। एस जयशंकर की इस शब्दावली पर आपत्ति की गई या होसकती है मगर ये अलंकार सही लगता है पाकिस्तान पर । हालांकि ये खिचड़ी तब से पक रही जब पाकिस्तान सेना प्रमुख मुनीर खान को डॉनल्ड ट्रंप ने पहलगाम के बाद वाशिंगटन बुलाया था।

दरअसल पाकिस्तान की कलई खोली आज इजरायल ने जब ईरान स्थित पाकिस्तान दूतावास पर मिसाइल से दो हमले किए। इजरायल ने पाकिस्तान को दलाल भी घोषित किया। इजरायल किसी भी कीमत पर अब अमेरिका को युद्ध से एग्जिट होने नहीं देना चाहता जबकि डॉनल्ड ट्रंप एग्जिट होने को आतुर क्योंकि उनके देश में इस युद्ध की खिलापत हो रही है। ईरान की इस्लामिक रिवॉलनसरी गार्ड

नहीं चाहता कि युद्ध अमेरिका की शर्तों पर रुके वह आर पार के मूड में है क्योंकि 40 वर्ष से इस युद्ध की तैयारी कर रहा था।1979 से वह अमेरिका की किरकिरी बना हुआ था।

पूरे दक्षिण और मध्य पूर्व एशिया में ईरान अकेला गैर सुन्नी मुस्लिम देश है उनकी धार्मिक मान्यता अलग है।जबकि सबसे बड़ा और प्राकृतिक रूप धनी देश है ।यहां की फारस की खड़ी की सभ्यता इराक की तरह प्राचीन है।जबकि इस्लाम तो छठवीं सदी में स्थापित हुआ है।ईरान के मुस्लिम हजरत पैगंबर मोहम्मद साहब को अंतिम मैसेंजर नहीं मानते जबकि सुन्नी मुस्लिम देश कतर, यूएई कुवैत,तुर्की,इराक, मिश्र,पाकिस्तान,बांग्लादेश,बहरीन, सऊदी अरब,आदि सुन्नी देश है।यही भावना ईरान को अलग करती है।

इसीलिए पाकिस्तान,तुर्की जैसे देश की मध्यस्थता ईरान को स्वीकार नहीं है ।दूसरे ईरान चाहता है कि अमेरिका अपनी सेना ईरान की जमीन पर उतार दे ।बताते दस लाख इस्लामिक रिवॉलनसरी गार्ड अमेरिका की सेना की धज्जियां उड़ाते दिखे गे।आज तक जमीनी युद्ध में अमेरिका जीता ही नहीं।ईरान पर कई विकल्प हैं जैसे खाड़ी देशों के पेयजल प्लांट को तवाह करना तो अमेरिकी सेना संकट में फंस जाएगी । 6 अप्रैल के बाद वाशिंगटन क्या करेगा। पाकिस्तान तुर्की चाहते हैं कि ईरान समर्पण करदे मगर ईरान अमेरिका को सबक सिखाने वाला है।

पाकिस्तान तो भीखमंगा देश है उस के पास विदेशी मुद्रा भंडार नहीं है तो बढ़ती दाम पर तेल कैसे खरीदे गा। अमेरिका के सामने इस लिए दलाल की भूमिका में है कि किसी प्रकार डॉनल्ड ट्रंप मदद कर दे। पाकिस्तान की इस मुखबिरी से इज़रायल सख्त नाराज इसलिए उसने आज पाकिस्तान की ईरान स्थित दूतावास पर मिसाइल से हमला किया।

भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर ने सही कहा कि भारत पाकिस्तान की तरह देश नहीं है जिसे कुछ लोग चला रहे हों मजबूत लोकतांत्रिक देश है दलाल नहीं ।

आइए, हम मिलकर भारत की नारी शक्ति को सशक्त करें

अब इस निर्णय को और टाला नहीं जा सकता। दशकों से इसकी आवश्यकता को स्वीकार किया गया है। इस पर चर्चा हुई है, इसे बार बार दोहराया गया है।

नरेंद्र मोदी

21वीं सदी की विकास यात्रा में हमारा भारत एक महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक क्षण की ओर आगे बढ़ रहा है। आने वाले दिनों में हम अपने लोकतंत्र को और मजबूत करने वाली एक बड़ी पहल के साक्षी बनने वाले हैं। यह ऐसा अवसर है, जब समानता, समावेशन और जनभागीदारी के प्रति हमारी राष्ट्रीय प्रतिबद्धता एक नए रूप में सामने आएगीहै। यह ऐसा समय है, जब हमारे देश की संसद को एक महत्वपूर्ण दायित्व निभाना है। उसे ऐसा कदम आगे बढ़ाना है, जो हमारे लोकतंत्र को अधिक व्यापक एवं और अधिक प्रतिनिधिक बनाए। संसद का यह निर्णय महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को नई शक्ति देगा और लोकसभा और विधानसभाओं संस्थाओं में उनका उचित स्थान सुनिश्चित करेगा।

यह क्षण इसलिए भी विशेष है, क्योंकि यह ऐसे समय में आ रहा है जब देश का वातावरण उत्सव, नवीनता और सकारात्मकता से भरा हुआ है। आने वाले दिनों में भारत के अलग अलग हिस्सों में अनेक पर्व मनाए जाएंगे। असम के लोग रोंगाली बिहू मनाने वाले हैं, और ओडिशा में महा बिशुबा पणा संक्रांति का उत्सव मनाया जाएगा। पश्चिम बंगाल में पोइला बैशाख के साथ बंगाली नववर्ष की शुरुआत होगी। केरलम में विषु पूरे उत्साह के साथ मनाया जाएगा। तमिलनाडु के लोग उत्सुकता से पुथांडु की प्रतीक्षा कर रहे हैं, तो पंजाब और उत्तर भारत के अन्य हिस्सों में लोगों को बैसाखी के पर्व का इंतजार है। हमारे ये पावन पर्व हर किसी में एक नई आशा का संचार करने वाले हैं। भारत के साथ-साथ दुनियाभर में इन त्योहारों को मनाने वाले सभी लोगों को मैं हृदय से शुभकामनाएं देता हूं। मैं ये कामना करता हूं कि ये दिव्य और पावन अवसर हम सभी के जीवन में सुख-समृद्धि लेकर आएं। इसी दौरान 11 अप्रैल से महात्मा फुले की 200वीं जयंती के समारोह भी शुरू होंगे। 14 अप्रैल को हम भारतवासी डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की जयंती मनाएंगे। ये दोनों तिथियां हमें सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा के उन मूल्यों की भी याद दिलाती हैं, जिन्होंने आधुनिक होते भारत की दिशा तय की हैं। इन्हीं प्रेरणादायी अवसरों के बीच, 16 अप्रैल को संसद की ऐतिहासिक बैठक होगी। महिला आरक्षण को लागू करने से जुड़े महत्वपूर्ण विधेयक पर चर्चा के बाद उसे पारित कराने के लिए विशेष सत्र बुलाया गया है। इसे सिर्फ एक विधायी प्रक्रिया कहना इसके महत्व को कम करके आंकना होगा। यह भारतवर्ष की करोड़ों महिलाओं की आकांक्षाओं का प्रतिबिंब है। हमारी नारीशक्ति देश की लगभग आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करती है। उन्होंने राष्ट्र निर्माण में अपना अमूल्य योगदान दिया है। आज देश के हर सेक्टर में नारीशक्ति मिसाल बन रही है। साइंस एंड टेक्नोलॉजी से लेकर एंटरप्रेन्योरशिप तक, खेल के मैदान से लेकर सशस्त्र बलों तक और संगीत से लेकर कला के क्षेत्र में महिलाएं अपनी सशक्त पहचान बना रही हैं। हमारी माताएं-बहनें और बेटियां देश की प्रगति में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। हमारे पारंपरिक मूल्य बताते हैं कि कोई भी समाज तभी प्रगति करता है, जब माताओं-बहनों को आगे बढ़ने के ज्यादा से ज्यादा मौके मिलते हैं। इसी सोच के साथ बीते 11 वर्षों में महिला सशक्तिकरण के लिए एक अनुकूल माहौल तैयार करने पर जोर दिया गया है, इसके लिए निरंतर प्रयास किए गए हैं। शिक्षा तक बढ़ती पहुंच, बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं, वित्तीय समावेशन में बढ़ोतरी और बुनियादी सुविधाओं तक बेहतर पहुंच ने आर्थिक और सामाजिक जीवन में महिलाओं की भागीदारी को मजबूती दी है। लेकिन ये भी सच्चाई है कि इन सारे प्रयासों के बावजूद भी राजनीति और विधायी संस्थाओं में महिलाओं प्रतिनिधित्व समाज में उनकी भूमिका के अनुरूप नहीं रहा है। इस कमी को अब दूर किया जाना चाहिए, क्योंकि जब महिलाएं प्रशासन चलाने और प्रशासनिक निर्णयों में हिस्सा लेती हैं, तो उनका अनुभव और विजन बहुत काम आता है। इससे चर्चा तो समृद्ध होती ही है, क्वालिटी ऑफ गवर्नेंस में सुधार भी होता है। महिलाओं की भागीदारी बढ़ाना केवल प्रतिनिधित्व का विषय नहीं है, ये हमारे लोकतंत्र को अधिक संवेदनशील, अधिक संतुलित और अधिक उत्तरदायी बनाने का प्रयास है।

पिछले कई दशकों में लोकतांत्रिक संस्थाओं में महिलाओं को उनका उचित स्थान दिलाने के लिए बार-बार प्रयास हुए हैं। समितियां गठित की गईं, विधेयकों के मसौदे प्रस्तुत किए गए, लेकिन वे कभी पारित नहीं हो सके। फिर भी, इस बात पर व्यापक सहमति रही है कि विधायी निकायों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढ़ना चाहिए। सितंबर 2023 में संसद ने सर्वसम्मति से नारी शक्ति वंदन अधिनियम पारित किया था। यह मेरे जीवन के सबसे विशेष अवसरों में से एक रहा है। अब जरूरत है कि 2029 के लोकसभा चुनाव और आने वाले समय में राज्यों के विधानसभा चुनाव महिला आरक्षण के प्रावधानों के साथ कराए जाएं। महिलाओं के लिए आरक्षण सुनिश्चित करने का यह अवसर हमारे संविधान की मूल भावना के साथ गहराई से जुड़ा है। हमारे संविधान निर्माताओं ने एक ऐसे समाज की कल्पना की थी, जहां समानता न केवल संविधान में निहित हो, बल्कि उसे व्यवहार में भी लाया जाए। विधायी संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी को सुनिश्चित करना, उस परिकल्पना को साकार करने की दिशा में एक अहम कदम है। यह एक ऐसे समाज के निर्माण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक है, जिसमें राष्ट्र का भविष्य तय करने में प्रत्येक नागरिक की समान भूमिका हो।

अब इस निर्णय को और टाला नहीं जा सकता। दशकों से इसकी आवश्यकता को स्वीकार किया गया है। इस पर चर्चा हुई है, इसे बार बार दोहराया गया है। अगर अब भी हम इसे आगे टालते हैं, तो उसका अर्थ यही होगा कि हम उस असंतुलन को और लंबा खींच रहे हैं, जिसे हम पहचानते भी हैं और सुधारने की क्षमता भी रखते हैं। आज भारत पूरे आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है। इसलिए ये जरूरी है कि हमारी संस्थाएं सभी नागरिकों, विशेष रूप से हमारी आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाली महिलाओं की आकांक्षाओं का सम्मान करें। इससे न सिर्फ दशकों पुराना संकल्प पूरा होगा, बल्कि विकास की गति को बनाए रखने में भी बहुत मदद मिलेगी। यह हमारे लोकतंत्र को अधिक उत्तरदायी बनाने और भविष्य के अनुरूप तैयार करने की दिशा में एक अहम कदम होगा। यह समय सामूहिक संकल्प का है। यह किसी एक सरकार, एक दल या एक व्यक्ति का विषय नहीं है। यह पूरे राष्ट्र का विषय है। हमें मिलकर इस कदम के महत्व को समझना है और मिलकर ही इसे साकार करना है। यही हमारी नारी शक्ति के प्रति हमारा दायित्व भी है, इसलिए महिला आरक्षण बिल को पारित कराने के लिए सहमति बहुत जरूरी है। इसे बड़े राष्ट्रीय हित को ध्यान में रखकर देखा जाना चाहिए। ऐसे अवसर हमें यह याद दिलाते हैं कि कुछ फैसले अपने समय से बड़े होते हैं। वे आने वाली पीढ़ियों की दिशा तय करते हैं। ये हमें याद दिलाते हैं कि लोकतंत्र की असली ताकत समय के साथ खुद को और अधिक न्यायपूर्ण और अधिक समावेशी बनाने की क्षमता में होती है। संसद का यह ऐतिहासिक सत्र करीब आ चुका है। मैं सभी दलों के सांसदों से हमारी नारीशक्ति के लिए इस महत्वपूर्ण कदम का समर्थन करने का आग्रह करता हूं। हम जिम्मेदारी और दृढ़ संकल्प के साथ इस दायित्व को पूरा करें। आइए, हम अपने लोकतंत्र की सर्वोच्च परंपराओं के अनुरूप इसमें अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।

लेखक देश के प्रधानमंत्री हैं

ब्लॉग

महिला आरक्षण-नया आयाम , क्यूँ ज़रूरी?

बृजमोहन श्रीवास्तव

आज देश में सबसे चर्चित विषय महिला आरक्षण है और इसका महत्व देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी के लेख से और अधिक हो गया है ।इसलिए यह ज़रूरी है कि इस आरक्षण के लिये हमारी तैयारी पर भी बात होना चाहिए ।

बात 1993-94 की है, जब मध्य प्रदेश में 73वें संविधान संशोधन के बाद पहली बार पंचायती राज संस्थाओं के चुनावों की घोषणा हुई। चूँकि ये चुनाव किसी राजनीतिक दल के चुनाव चिन्ह पर नहीं होने थे, इसलिए सभी नेता अपने-अपने समर्थित उम्मीदवारों को मैदान में उतारने की तैयारी में थे।

मैंने व भोपाल सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंक के अध्यक्ष, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी अनिरूध प्रसाद शास्त्री जी ने यह निर्णय लिया कि हम भोपाल जिले की सभी पंचायतों व अन्य स्थानों में अपने प्रत्याशी खड़े करेंगे।

चुनाव की तैयारी के प्रथम चरण में जब महिला प्रत्याशियों की तलाश शुरू की तो हमें भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा क्योंकि संशोधन के कारण 33 प्रतिशत पद महिलाओं के लिये आरक्षित तो थे ही मगर उसमें भी पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के लिए भी आरक्षण निर्धारित था। इसके चलते योग्य और इच्छुक महिला उम्मीदवारों का मिलना कठिन था।

जनपद सदस्य के लिये एक वार्ड अनुसूचित जाति की महिला के लिए आरक्षित था। जब हमने उस वार्ड के लिए मतदाता सूची में महिला प्रत्याशी की तलाश शुरू की तो समझ आया कि चयन बहुत सीमित मतदाताओं में से ही करना पड़ेगा । तब हमें अपने एक समर्थक के खेत में काम करने वाली आठवीं पास युवा महिला—आशा मिली ।

जब हमने उस युवती के सामने चुनाव लड़ने का प्रस्ताव रखा उसने आश्चर्य के साथ बस इतना ही कहा जैसा भैय्या बोलें मगर उसका अगला सवाल था - रोज़ी रोटी का क्या होगा और करना क्या पड़ेगा ? हमने उसे बताया कि चुनाव में लोगों से वोट मांगना होगा और जीतने के बाद जनपद सदस्य के रूप में जनता के लिए काम करना होगा। वहीं मेरे समर्थक ने उसे नौकरी चलते रहे का आश्वासन दिया । अपने पति से बातचीत कर वह चुनाव के लिए तैयार हो गई । उसके नामांकन के बाद चुनाव प्रचार के दौरान मैंने उसे वोट माँगते समय उसमें आ रहे बदलाव को क़रीब से महसूस किया और इस बदलाव की छलक एक छोटी-सी आम सभा में देखी । हम सभी का मानना था कि वह भाषण नहीं देगी मगर उसने सबको ग़लत साबित करते हुऐ भाषण दिया और ऐसा बोला कि देर तक तालियाँ बजती रहीं । उसने बहुत ही सरल, लेकिन आत्मविश्वास से भरे शब्दों में कहा— मैं इसी गाँव की बेटी हूँ। जब मैं यहाँ से निकलती थी, तो मेरे पैर मिट्टी में सन जाते थे। अगर मैं चुनाव जीती तो मेरी कोशिश होगी कि अब गाँव में किसी भी बेटी के पैर मिट्टी में नहीं सने।" उसके ये शब्द वहाँ उपस्थित हर व्यक्ति के मन में गहराई तक उतर गए थे । मैंने उस कम शिक्षित, मजदूर आशा को आशा देवी बनने की यात्रा को क़रीब से देखा । मैं एक साधारण महिला को राजनेता बनते देख रहा था और यह इसलिए हो रहा था क्योंकि मुक़ाबले में महिलायें ही थी। वह चुनाव तो हार गई मगर चुनाव लड़ने से उसमें जो आत्मविश्वास पैदा हुआ उसने एक महिला नेत्री को जन्म दिया ।वह इससे आगे के चुनाव लड़ने की ख्वाहिश होने के बावजूद भी पिछड़ गई, मैं आज जब पूरे हालात का विश्लेषण करता हूँ तो मुझे लगता है कि यदि उसे पुरुष नेताओं के साथ संघर्ष नहीं करना होता तो शायद वह आज कम से कम जिला स्तर पर तो काम कर रही होती ।

यह एक महिला के नेता बनने और फिर गुमनाम होने की कहानी नहीं है बल्कि प्रतिभा, संकल्प और उर्जा से भरीं लाखों महिलाओं की बात है । पिछले तीस-पैंतीस सालों में जब से महिला सशक्तिकरण के लिये लोकसभा-विधानसभा में महिला आरक्षण की माँग उठी है तब लेकर अब तक सार्वजनिक क्षेत्र की कई संस्थायें जैसे स्थानीय निकायों, पंचायती राज संस्थाओं, सहकारिता , कारपोरेट, कानूनी संस्थाएं और अन्य संगठनों में महिलाओं को जो आरक्षण मिला, उसने देश की राजनीति में महिलाओं की भागीदारी को एक नई दिशा दी है।

महिला आरक्षण के कारण लाखों महिलाओं ने विभिन्न पदों पर काम करके प्रशासनिक व चुनावी अनुभव प्राप्त कर लिया है ।आज देश का कोई ऐसा सार्वजनिक मंच नहीं है जहाँ महिलाएँ नेतृत्व नहीं कर रही हो ।

जिस चुनाव का मैंने ज़िक्र किया है उसे बीते लगभग पैंतीस वर्ष बीत चुके हैं मगर आज जब पीछे मुड़कर देखता हूँ विश्वास से भर जाता हूँ कि हमारी आबादी का पचास प्रतिशत अब क़ानून बनाने के लिये पूरी तौर से तैयार है, इसलिए इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिये अन्तिम कदम उठाने में देरी करना ठीक नहीं हैं क्योंकि आज देश की महिलाएँ न केवल जागरूक हैं, बल्कि राजनीतिक रूप से परिपक्व भी हो चुकी हैं। ऐसे में यह स्वाभाविक है कि उन्हें देश के सर्वोच्च नीति-निर्माण मंचों पर कानून बनाने का भी समान अवसर मिलना चाहिए।

सालों की लंबी बहस के बाद आखिरकार वह ऐतिहासिक क्षण सितंबर 2023 में आया जब हमारी संसद ने लम्बी सार्थक बहस के बाद 106वें संविधान संशोधन को मंज़ूरी देते हुए महिला आरक्षण विधेयक पारित किया । इस कानून के तहत अब लोकसभा और राज्य विधानसभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित किया गया है।

हम सब जानते है कि आज तक देश में बने क़ानूनों मे पुरुषों की भागीदारी अधिक रही है फलस्वरूप क़ानूनों में पुरुष सोच का वर्चस्व रहा है जो कि स्वाभाविक है। यही कारण रहा कि महिलाओं से जुड़े कई महत्वपूर्ण कानून समय पर नहीं बन सके। इसके चलते हमारे लोकतंत्र में अनेक ऐसी योग्य महिलाओं अवसरों से वंचित रह गई , जो उत्कृष्ट नेतृत्व दे सकती थीं ।

अब यह कानून उस ऐतिहासिक कमी को दूर करने की दिशा में एक निर्णायक कदम है। इसके माध्यम से महिलाओं को यह संवैधानिक अधिकार मिलेगा कि वे उन सीटों से चुनाव लड़ सकें, जो उनके लिए आरक्षित होंगी। इससे न केवल महिलाओं की भागीदारी बढ़ेगी, बल्कि देश के लोकतंत्र में एक नई ऊर्जा और संतुलन स्थापित होगा ।

देश में एनडीए सरकार के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी लगातार इस बात पर बल देते रहे हैं कि महिलाओं को आरक्षण बहुत पहले मिल जाना चाहिए था मगर उनका स्पष्ट मानना है कि इसमें और देरी स्वीकार नहीं है । उन्होंने नारी शक्ति को लोकतंत्र में पूर्ण अवसर देने का संकल्प लेते हुए हर हाल में इस विधेयक को लागू करने की प्रतिबद्धता समय समय पर व्यक्त की है।

यही कारण है कि अब यह विश्वास मजबूत होता जा रहा है कि वर्ष 2029 के लोकसभा चुनावों में हम 33 प्रतिशत आरक्षण के कारण बड़ी संख्या में महिलाओं को संसद में देख सकेंगे।

यह सत्य है कि यह संशोधन जनगणना और परिसीमन की प्रक्रिया से जुड़ा हुआ है, लेकिन जिस दृढ़ता और प्रतिबद्धता के साथ इस दिशा में प्रयास हो रहे हैं, उससे यह स्पष्ट है कि अब वह दिन दूर नहीं जब भारत की महिलाएँ संसद में बैठकर देश के कानून निर्माण में निर्णायक भूमिका निभाएँगी।

यह केवल एक राजनीतिक परिवर्तन नहीं होगा, बल्कि यह भारत के लोकतंत्र में समानता, प्रतिनिधित्व और सामाजिक न्याय के एक नए युग की शुरुआत होगी । इस में राजनीति देखने वाले लोगों को खुद से यह प्रश्न करना चाहिए कि ऐसा करके वह लोकतंत्र को मजबूत करने की ओर अग्रसर देश की गति को धीमा क्यूँ करना चाहते है?

राष्ट्रीय महासचिव एवं मुख्य राष्ट्रीय प्रवक्ता राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी

नोएडा-लखनऊ से लेकर इलाहाबाद तक, जहां भाजपा का दबदबा वहीं कटे ज्यादा वोट

आर्यावर्त संवाददाता

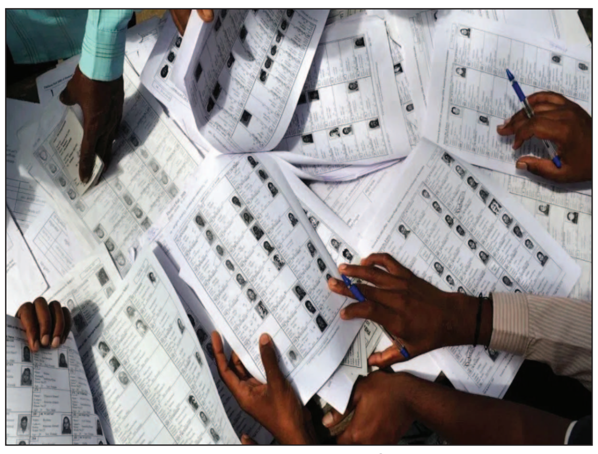

नोएडा। उत्तर प्रदेश में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) के बाद बीजेपी के मजबूत प्रभाव वाले जिलों में मतदाताओं की संख्या में सबसे ज्यादा कमी दर्ज की गई है, जबकि मुस्लिम बहुल जिलों में यह कमी अपेक्षाकृत कम रही है। मतदाता सूची में हुए इस बड़े बदलाव ने एक नया राजनीतिक विमर्श खड़ा कर दिया है। आने वाले चुनावी समीकरणों पर इसके संभावित असर को लेकर गहन चर्चा शुरू हो गई है।

आंकड़ों के मुताबिक, लखनऊ, गाजियाबाद, कानपुर, कानपुर नगर, गौतमबुद्धनगर और मेरठ जैसे जिलों में 27 अक्टूबर 2025 की पुरानी सूची की तुलना में मतदाताओं के नाम काटे जाने का प्रतिशत सबसे ज्यादा रहा। इन जिलों में 18.75 प्रतिशत से लेकर 22.89 प्रतिशत तक वोट घट गए। खास बात ये है कि इन सभी क्षेत्रों में 2022 के विधानसभा चुनाव में बीजेपी ने ज्यादातर सीटें जीती थीं और लोकसभा चुनाव के लिहाज से भी ये सीटें भाजपा के गढ़ मानी जाती हैं।

पांच सीटों पर सबसे ज्यादा नाम कटे

राज्य की पांच विधानसभा सीटों पर सबसे ज्यादा नाम कटे हैं, जहां बीजेपी के ही विधायक हैं। इनमें साहिबाबाद, नोएडा, लखनऊ उत्तर, आगरा कैंट और इलाहाबाद नॉर्थ शामिल हैं।

मुस्लिम बहुल जिलों की स्थिति बेहतर

वहीं मुस्लिम बहुल जिलों की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर रही। संभल में 14.47 प्रतिशत, रामपुर में 12.33 प्रतिशत, मुरादाबाद में 10.09 प्रतिशत, बिजनौर में 9.63 प्रतिशत, शाहजहांपुर में 17.90 प्रतिशत, सहारनपुर में 10.48 प्रतिशत और मुजफ्फरनगर में 10.38 प्रतिशत मतदाता कम हुए। बीजेपी प्रभाव वाले शहरी और विकसित जिलों में ज्यादा वोट कटे जबकि मुस्लिम बहुल ग्रामीण-शहरी मिश्रित जिलों में अपेक्षा कम कटे।

16 सीटें, जहां 1 लाख+ वोट कटे, 15 BJP की।

21 सीटों पर 80 से 99 हजार वोट कटे, 19 बीजेपी की।

82 सीटों पर 50-80 हजार वोट कटे, 55 BJP+ की।

159 विधानसभा में 30-50 हजार वोट कटे, 95 BJP की।

BJP+ की अधिकतर सीटों पर 18-34% गिरावट है, जबकि सपा की अधिकांश सीट 8-15% गिरावट वाली हैं।

असंतुष्ट लोग कर सकते हैं अपील

उत्तर प्रदेश के मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रिणवा ने बीते शुक्रवार (10 अप्रैल) को बताया कि बिना कानूनी प्रक्रिया अपनाए कोई भी नाम मतदाता सूची से नहीं काटा गया है। उन्होंने कहा कि अगर कोई व्यक्ति निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी के निर्णय से असंतुष्ट है तो वह लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 के तहत अंतिम नामावली के प्रकाशन के 15 दिनों के भीतर जिलाधिकारी के समक्ष पहली अपील दायर कर सकता है। यदि फिर भी असंतुष्ट है, तो जिलाधिकारी के निर्णय के 30 दिनों के भीतर मुख्य निर्वाचन अधिकारी के समक्ष दूसरी अपील दायर की जा सकती है। उन्होंने बताया किविशेष गहन पुनरीक्षण (SIR)-2026 के बाद प्रकाशित अंतिम मतदाता सूची में राज्य में 84 लाख से अधिक मतदाताओं की वृद्धि हुई है, जिससे कुल मतदाता संख्या 13.39 करोड़ हो गई है। उन्होंने कहा कि SIR प्रक्रिया 27 अक्टूबर, 2025 से 10 अप्रैल, 2026 तक आयोजित की गई थी, जिसमें प्रदेश के सभी 75 जिलों, 403 विधानसभा क्षेत्रों और मतदान केंद्रों को शामिल किया गया था।

विधायक ने दो खिलाड़ियों को किया सम्मानित

आर्यावर्त संवाददाता

जयसिंहपुर/सुलतानपुर। क्षेत्र के दो होनहार खिलाड़ियों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए शानदार प्रदर्शन किया है। शुभम धुरिया 67 किलोग्राम वर्ग में गोल्ड मेडल व प्रियाल धुरिया 36 किलोग्राम वर्ग में गोल्ड मेडल दोनों खिलाड़ी मडई, परगना बरौंसा, जयसिंहपुर, सुल्तानपुर (उत्तर प्रदेश) के निवासी हैं, जिन्होंने अपने उत्कृष्ट खेल से क्षेत्र और देश का नाम रोशन किया है।

इस अवसर पर क्षेत्र के विधायक राज बाबू उपाध्याय ने दोनों खिलाड़ियों को सम्मानित किया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि क्षेत्र के बच्चों को आगे बढ़ाने के लिए वह हर संभव सहयोग देने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे। विधायक ने यह भी विश्वास जताया कि गांव के प्रधान एवं ब्लॉक प्रमुख भी इन प्रतिभाशाली खिलाड़ियों के साथ खड़े रहेंगे और उनके विकास में पूरा सहयोग देंगे। इस सफलता के पीछे आर्म बॉक्सिग के डायरेक्टर नसरुद्दीन का भी बड़ा योगदान रहा है, जिनके मार्गदर्शन में यह खिलाड़ी तैयार हुए हैं। उनकी क्लासेस सुल्तानपुर के मुंशी प्रेमचंद पार्क, बढ़यि वीर में लगातार संचालित हो रही हैं, जहां बच्चों को उच्च स्तर का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। उन्होंने दोनों खिलाड़ियों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि वे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत के लिए और अधिक मेडल जीतकर वापस आएं। साथ ही यह भी आश्वासन दिया गया कि उनकी इस उपलब्धि पर पूरे गांव में भव्य स्वागत किया जाएगा।

जयसिंहपुर के इन उभरते सितारों ने यह साबित कर दिया है कि मेहनत और लगन से गांव के बच्चे भी अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी पहचान बना सकते हैं। क्षेत्रवासियों को इन पर गर्व है और सभी इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं।

जिसके साथ शादी के देखे सपने, वो पल भर में टूट गया, थाने जाकर लड़की ने पिया जहर

आर्यावर्त संवाददाता

गोरखपुर। यूपी के गोरखपुर जिले में प्रेम विवाह न होने से नाराज एक युवती ने थाने पहुंचकर कीटनाशक पी लिया। पुलिस ने उसे इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया है। घटना जिले के पिपराइच थाना क्षेत्र की है। बताया जाता है कि अपनी पसंद के युवक से शादी की जिद पर अड़ी युवती ने परिवार के इनकार के बाद यह कदम उठाया।

पुलिस के मुताबिक युवती कुछ दिन पहले घर से लापता हो गई थी, जिसके बाद परिजनों ने उसकी गुमशुदगी दर्ज कराई थी। तलाश के बीच शुक्रवार दोपहर युवती खुद थाने पहुंच गई। थाने पहुंचकर युवती ने पुलिस को बताया कि वह एक युवक से प्रेम करती है और उसी से शादी करना चाहती है, लेकिन परिजन उसकी शादी 29 अप्रैल को किसी दूसरे युवक से तय कर दी थी।

इससे नाराज होकर युवती 8 अप्रैल की शाम घर छोड़कर चली गई थी। पुलिस ने जब उसके परिजनों को थाने बुलाया, जहां परिजन और युवती के बीच घंटों हाई-वोल्टेज ड्रामा चला। परिजन युवती को समझाने की कोशिश करते रहे, लेकिन वह अपने प्रेमी से शादी की बात को लेकर अड़ी रही। इसी दौरान परिवार ने प्रेम विवाह से साफ इनकार कर दिया। इससे नाराज युवती ने अचानक अपने पास पहले से रखे कीटनाशक को पी लिया।

थाने में मचा हड़कंप

घटना होते ही थाने में हड़कंप मच गया। युवती तुरंत बाहर की ओर भागी, लेकिन पुलिसकर्मियों ने पीछा कर उसे गेट के पास पकड़ लिया। कुछ ही देर में उसकी हालत बिगड़ने लगी और उसे उल्टियां होने लगीं। पुलिस ने उसे तुरंत इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया। एसपी नॉर्थ ज्ञानेंद्र सिंह के मुताबिक, युवती परिवार द्वारा दूसरी जगह शादी तय किए जाने से नाराज थी। पुलिस ने युवती के बयान दर्ज कर लिए हैं।

व्यापारियों का हुआ सम्मान

फोटो न0-04

सुलतानपुर(आरएनएस)। विगत 19 मार्च भारतीय हिन्दू नव वर्ष के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मण्डल के प्रदेश मंत्री हिमांशु मालवीय के दिशा निर्देशन में चौक घंटा पर आयोजित भव्य कार्यक्रम के सफल आयोजन पर आज संगठन के सभी मुख्य पदाधिकारियों ने उक्त आयोजन में शामिल स्पोंसर व्यापारियों को अंग वस्त्र एवं स्मृति चिन्ह देकर उनका धन्यवाद एवं आभार प्रकट किया गया जिसमें मुख्य रूप से रणजीत सिंह शेमफ़ोर्ड पब्लिक स्कूल, प्रमोद पांडेय लिटिल फ्लावर स्कूल, सुरेश सोनी यशराज ज्वेलर्स, सुधीर अग्रहरि दास ज्वैलर्स,परितोष कसौधन राम लखन मैरिज पॉइंट, धर्मेंद्र सिंह एमडी ग्रुप, महेंद्र पाल सिंह मेहमान होटल, शशांक मिश्रा एसकेएम स्कूल, राम सहाय मिश्रा मिश्रा कैटरर्स, हर्षित गुप्ता रॉयलस्टो रेस्टोरेंट, राकेश कौशल कौशल इलेक्ट्रॉनिक्स, शैलेंद्र बरनवाल गोपाल पब्लिक स्कूल आदि व्यवसायीयों ने अपनी अहम भूमिका निभाई थी।

इस मौक़े पर प्रदेश मंत्री हिमांशु

मुरादाबाद की ड्रग्स क्वीन सीमा अरेस्ट, कैसे काम करती थी इसकी लेडी ब्रिगेड?

आर्यावर्त संवाददाता

मुरादाबाद। उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद में पुलिस को बड़ी कामयाबी हाथ लगी है। लेडी डॉन कुख्यात सीमा को आखिरकार पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस के अनुसार, सीमा न केवल ड्रग्स की सप्लाई करती थी, बल्कि वह एक गिरोह भी चलाती थी। उसके पास से 1076 ग्राम उच्च गुणवत्ता वाली चरस बरामद की गई, जिसकी बाजार में कीमत लाखों रुपये आंकी जा रही है।

बताया जा रहा है कि सीमा पाकबड़ा के बड़ा मंदिर मोहल्ले में रहकर अपने नेटवर्क को संचालित कर रही थी और इलाके में उसका खासा दबदबा था। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल के निर्देश पर चलाए गए विशेष अभियान के तहत यह कार्रवाई की गई। पुलिस अधीक्षक नगर कुमार रणविजय सिंह के नेतृत्व में क्षेत्राधिकारी हाईवे और पाकबड़ा थाना पुलिस की संयुक्त टीम ने इस शातिर महिला तस्कर को दबोचने में सफलता हासिल की।

जांच में यह भी सामने आया है कि सीमा का गिरोह बेहद चालाकी से काम करता था। पुलिस से बचने के लिए सीमा ने महिलाओं की एक 'लेडी ब्रिगेड' बना रखी थी। सीमा महिलाओं को ढाल के रूप में इस्तेमाल करती थी। गिरोह के सदस्य अक्सर महिलाओं के जरिए नशीले पदार्थों की डिलीवरी कराते थे, ताकि चेकिंग के दौरान शक कम हो। लंबे समय तक इसी रणनीति के चलते यह नेटवर्क सक्रिय रहा और पुलिस की पकड़ से बचता रहा।

घटना के दिन पाकबड़ा थाना पुलिस क्षेत्र में गश्त और चेकिंग कर रही थी। इसी दौरान शिवन देवी मंदिर के पास एक महिला संदिग्ध हालत में घूमती दिखाई दी। पुलिस ने उसे रोककर पूछताछ की और महिला पुलिसकर्मियों द्वारा तलाशी लेने पर उसके पास से भारी मात्रा में चरस बरामद हुई। इसके बाद उसे तुरंत हिरासत में लेकर पूछताछ की गई, जिसमें उसके पूरे नेटवर्क की जानकारी सामने आने लगी।

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि सीमा इस गिरोह की महज सदस्य नहीं, बल्कि मुख्य संचालक थी। उसके साथ कई पुरुष और महिला तस्कर जुड़े हुए हैं, जो इस अवैध धंधे को फैलाने में मदद करते थे। अब पुलिस उन सभी सहयोगियों की तलाश में जुट गई है, जो पर्दे के पीछे रहकर इस नेटवर्क को आर्थिक और लॉजिस्टिक सपोर्ट दे रहे थे।

कॉल डिटेल्स और बैंक खातों की भी जांच जारी

सीमा के खिलाफ थाना पाकबड़ा में एनडीपीएस एक्ट की धारा के तहत मुकदमा दर्ज किया गया है। उसे कड़ी सुरक्षा के बीच कोर्ट में पेश किया गया, जहां से न्यायालय के आदेश पर उसे न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया। पुलिस अब उसके कॉल डिटेल्स और बैंक खातों की भी जांच कर रही है।

सीजेएम कोर्ट ने विवेचक व सीओ नगर को किया तलब

आर्यावर्त संवाददाता

सुलतानपुर। विजय नारायण सिंह हत्याकांड में मुख्य आरोपी अजय सिंह सिलावट के खिलाफ चार्जशीट पेश हो जाने के बाद अन्य आरोपियो के खिलाफ चल रही जांच रिपोर्ट शुक्रवार को क्राइम ब्रांच की इंस्पेक्टर सीमा सरोज ने सीजेएम कोर्ट में पेश किया। इस विवेचना रिपोर्ट को सीओ नगर ने पर्यवेक्षण करते हुए अग्रसारित किया है। कोर्ट में विवेचना रिपोर्ट पर सुनवाई के दौरान ओवर राइटिंग व अन्य लापरवाहियो से जुड़ा मामला सामने आया। सीजेएम नवनीत सिंह की अदालत ने मामले में कड़ा रुख अपनाते हुए एसपी के माध्यम से अपना स्पष्टीकरण पेश करने के लिए विवेचक हंसमती व सीओ नगर को नोटिस जारी कर व्यक्तिगत रूप से 18 अप्रैल के लिए तलब किया है।

कोतवाली नगर के नारायनपुर निवासी सतीश नारायण सिंह ने सात अप्रैल 2024 को पल्लवी होटल के सामने अपने भाई विजय नारायण सिंह की गोली मारकर की गई हत्या के आरोप में मुकदमा दर्ज कराया था, जिसमें अम्बेडकर नगर जिले के महरुआ निवासी अजय सिंह सिलावट,पयागीपुर निवासी दीपक मिश्र, डॉक्टर घनश्याम तिवारी की पत्नी निशा तिवारी,सह आरोपी विनय तिवारी व अन्य का नाम मुकदमे में शामिल किया था। मामले में पुलिस ने मात्र अजय सिंह सिलावट के खिलाफ चार्जशीट दाखिल किया है,जिसके खिलाफ एडीजे प्रथम की कोर्ट में ट्रायल चल रहा है और मामले में गवाही के लिए 23 अप्रैल की तारीख तय है। मामले में छह नामजद व कुछ अज्ञात आरोपियो के खिलाफ विवेचना लम्बित रही। जिसके सम्बन्ध में पुलिस ने अपनी जांच रिपोर्ट सीजेएम कोर्ट में पेश किया।

10 मौतें–6 लापता... 14 घंटे से रेस्क्यू जारी, क्या नाविक की जिद बनी यमुना हादसे की वजह?

आर्यावर्त संवाददाता

वृंदावन। वृंदावन के केशी घाट पर यमुना नदी में हुए भीषण स्टीमर हादसे के बाद रेस्क्यू ऑपरेशन लगातार जारी है। हादसे को करीब 14 घंटे से अधिक समय बीत चुका है, लेकिन अब भी 6 श्रद्धालुओं का कोई सुराग नहीं मिल पाया है। एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, स्थानीय पुलिस प्रशासन और गोताखोरों की टीमें सर्च ऑपरेशन में जुटी रहीं।

शुक्रवार दोपहर हुए इस दर्दनाक हादसे में अब तक 10 लोगों की मौत की पुष्टि हो चुकी है, जबकि 22 श्रद्धालुओं को सुरक्षित बाहर निकाला जा चुका है। स्टीमर में कुल 37 श्रद्धालु सवार थे। इनमें से 6 अब भी लापता बताए जा रहे हैं, जिनकी तलाश जारी है।

लापता श्रद्धालुओं में मनीक टंडन, पंकज मल्होत्रा, ऋषभ शर्मा, यश भल्ला और मौनिका बताए जा रहे हैं। इन सभी के परिजन वृंदावन के केशी घाट पहुंच चुके हैं, जहां हादसा हुआ था। परिजनों की चिंता लगातार बढ़ती जा रही है और वे रेस्क्यू टीमों से जल्द से जल्द अपनों की जानकारी मिलने की उम्मीद लगाए बैठे हैं।

क्या कहती है पुलिस?

पुलिस प्रशासन का कहना है कि यह भी हो सकता है कि लापता लोगों में से कुछ श्रद्धालु सुरक्षित होकर किसी अन्य स्थान पर पहुंच गए हों। प्रशासन आसपास के अस्पतालों, धर्मशालाओं और अन्य संभावित स्थानों पर भी जानकारी जुटा रहा है। वहीं परिजनों का कहना है कि अब तक उनके परिजन उनके संपर्क में नहीं आए हैं, जिससे अनहोनी की आशंका और गहरी हो गई है।

10 श्रद्धालुओं की मौत

प्रशासनिक अधिकारियों के मुताबिक, जिन 10 श्रद्धालुओं की मौत हुई थी, उनके शवों का पोस्टमार्टम कराने के बाद जिला प्रशासन की ओर से सरकारी सहायता के साथ उनके गृह जिलों के लिए रवाना कर दिया गया है। वहीं हादसे में घायल लोगों का आसपास के अस्पतालों में इलाज चल रहा है, जहां कई की हालत गंभीर बताई जा रही है। रेस्क्यू टीमों का कहना है कि अगले 24 घंटे इस ऑपरेशन के लिए बेहद अहम हैं। माना जा रहा है कि एक दिन पूरा होने के बाद ही स्थिति पूरी तरह साफ हो पाएगी और लापता लोगों के बारे में ठोस जानकारी सामने आएगी।

पंजाब के लुधियाना से 32 श्रद्धालुओं का जत्था वृंदावन बांके बिहारी के दर्शन करने आया था। शुक्रवार सुबह सभी ने बांके बिहारी के दर्शन किए और फिर स्टीमर पर सवार होकर यमुना नदी में सैर पर निकल गए। इसी दौरान स्टीमर जब केशी घाट पर पहुंचा, तभी वहां बने पांटून पुल से टकरा गया। पुल से टकराते ही स्टीमर अनियंत्रित होकर नदी में पलट गया।

बताया जा रहा है कि श्रद्धालु नाविक को लौटने के लिए बोल रहे थे, लेकिन उसने किसी की बात नहीं मानी और बोट को आगे ले गया। जिस दौरान बोट पांटून पुल से टकरा गया गई, जिस कारण यह हादसा हुआ। वहीं पीएम आपदा कोष से हादसे में मृतकों के परिजन को दो-दो लाख रुपये और घायलों को 50-50 हजार रुपये की सहायता राशि देने की घोषणा की गई है।

छुआछूत के खिलाफ संघर्ष करते रहे ज्योतिबा फुले : सपा

आर्यावर्त संवाददाता

जौनपुर। समाजवादी पार्टी के जिला कार्यालय सदर चुंगी अल्फस्टीनगंज जिला अध्यक्ष राकेश मौर्य की अध्यक्षता में महान समाज सुधारक, एवं लेखक, सामाजिक न्याय की बुलंद आवाज महात्मा गोविंद राव ज्योतिबा फुले की जयंती समारोह पूर्वक बनाई गई।सर्वप्रथम उपस्थित सपाजनों ने महात्मा ज्योतिबा फुले के चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया।तत्पश्चात जिला महासचिव आरिफ हबीब ने विचार गोष्ठी आयोजित कर उनके जीवन दर्शन पर चर्चा कराते हुए पुनः संकल्प दिलाया गया। जिलाध्यक्ष राकेश मौर्य ने कहा कि सामाजिक न्याय की आवाज को बुलंद कर महात्मा ज्योतिबा फुले जाति-आधारित भेदभाव और छुआछूत के खिलाफ आजीवन संघर्ष करते रहे।वह एक महान भारतीय विचारक, समाज सुधारक और लेखक थे।सत्यशोधक समाज की स्थापना और महिलाओं के शिक्षा के प्रणेता रहे। सामाजिक क्रांति के जनक को उनके असाधारण सामाजिक कार्यों के लिए महात्मा की उपाधि दी गई। पूर्व विधायक राजनरायन बिंद,लालबहादुर यादव, श्यामबहादुर पाल, हीरालाल विश्वकर्मा, डॉ जितेंद्र यादव, प्रभानंद यादव, भूपेश पाण्डेय, मालती निषाद, सूर्यभान यादव, रामू मौर्य, नंदलाल यादव, पवन कुमार मंडल, श्यामनारायण बिंद, बरसातू राम सरोज, हरिश्चंद प्रभाकर आदि ने संबोधित करते हुए महात्मा ज्योतिबा फुले जी को श्रद्धा सुमन अर्पित किया।अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन होने पर जिला अध्यक्ष राकेश मौर्य ने कहा कि मतदाता सूची की गहन समीक्षा बूथवार कराएंगे।

बेड पर कंकाल, उसपर गंदगी का ढेर, बदबू दूर करने को अपनाया ये अनूठा तरीका, मेरठ की प्रियंका की मौत की कहानी

आर्यावर्त संवाददाता

मेरठ। मेरठ के सदर बाजार थाना इलाके के तेली मोहल्ले में शुक्रवार को दिल दहलाने वाली घटना सामने आई है। बेसिक शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्त लिपिक उदय भानु विश्वास अपनी 33 वर्षीय अविवाहित बेटी प्रियंका विश्वास की लाश के साथ कई दिनों तक घर में रहा। फिर अचानक वह घर पर बाहर से ताला लगाकर लापता हो गया और करीब चार महीने बाद जब वापस लौटा तब इस भयानक राज से पर्दा उठा। बेटी प्रियंका का कंकाल घर पर बेड पर मिला है। पुलिस ने उदय भानु को गिरफ्तार कर लिया। प्राथमिक पूछताछ में तंत्र-मंत्र के चलते मौत होना सामने आया है। सीओ सदर कैंट नवीना शुक्ला का कहना कि पुलिस पूछताछ करने में जुटी है। पुलिस के अनुसार, प्रियंका विश्वास एक निजी स्कूल में शिक्षिका थीं और लंबे समय से पीलिया (जॉन्डिस) से जूझ रही थीं। सितंबर 2025 के बाद वह स्कूल नहीं गईं। शुक्रवार को आरोपी पिता उदय भानु विश्वास बेगमबाग में एक चाय की दुकान पर बैठा था तभी उसके भतीजे विश्वजीत विश्वास की नजर उस पर पड़ी। जब विश्वजीत ने प्रियंका के बारे में पूछा तो उदय भानु उसे गुमराह करने लगा। उसने कभी प्रियंका को देहरादून तो कभी गाजियाबाद के अस्पताल में भर्ती होने की बात कही।

शक होने पर विश्वजीत ने परिवार के अन्य सदस्यों को मौके पर बुला लिया। कड़ी पूछताछ के बाद उदय भानु टूट गया और उसने स्वीकार किया कि प्रियंका का शव घर के भीतर ही है।

बेड पर मिला कंकाल, मंजर देख कांप गई रूह

जब परिजन और पुलिस तेली मोहल्ला स्थित घर पहुंचे और दरवाजा खोला तो वहां का मंजर स्तब्ध कर देने वाला था। घर के भीतर एक कमरे में बेड पर प्रियंका का कंकाल और कुछ बाल अवशेष के रूप में बचे थे।

> उदय भानु को गिरफ्तार कर उससे सघन पूछताछ की जा रही है। फॉरेंसिक टीम ने मौके से महत्वपूर्ण साक्ष्य एकत्र किए हैं। शव (कंकाल) को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है, जिसकी रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के वास्तविक कारणों और समय का सटीक पता चल सकेगा कि यह प्राकृतिक मौत थी या इसके पीछे कोई साजिश है।
>
> -अविनाश पांडेय, एसएसपी
>
> जब कोई व्यक्ति गहरे सदमे या लंबे शोक से गुजरता है तो उसका मस्तिष्क डिफेंस मोड में जाकर वास्तविकता को पूरी तरह नकार सकता है। शव के साथ रहना अपराधी प्रवृत्ति से ज्यादा, एक विक्षिप्त मानसिक स्थिति है जहां व्यक्ति अपनों को खोने के डर से इस कदर टूट जाता है कि उसे सड़ते हुए शव में भी जीवन का भ्रम होने लगता है।
>
> - डॉ. रवि राणा, मनोचिकित्सक

शव से आने वाली सड़ांध को छिपाने के लिए पिता ने उस पर पानी बहाया था और शव के ऊपर गंदगी का ढेर लगा रखा था। सूचना मिलते ही सीओ सदर कैंट नवीना शुक्ला और सदर बाजार पुलिस मौके पर पहुंची। फॉरेंसिक टीम ने साक्ष्य जुटाए और कंकाल को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस ने आरोपी पिता उदय भानु को गिरफ्तार कर लिया है।

पूरे घर में दुर्गंध

घर का दरवाजा खुलने पर सामने आया दृश्य स्तब्ध कर देने वाला था। शव की हालत इतनी खराब थी कि पहचान करना मुश्किल हो गया था। दुर्गंध छिपाने के लिए शव पर पानी भी बहाया। उसने शव के ऊपर गंदगी का ढेर भी लगा रखा था। यह तरीका चौंकाने वाला है और सवाल उठाता है कि पिता ऐसा कैसे कर सकता है।

सितंबर से लापता थी प्रियंका

भतीजे विश्वजीत के अनुसार, प्रियंका और उदय भानु घर में अकेले रहते थे। 13 साल पहले उदय भानु की पत्नी शमिष्ठा ने आत्महत्या कर ली थी।

सितंबर 2025 में उदय भानु ने घर पर दुर्गा पूजा कराई थी जिसके बाद से न तो प्रियंका दिखी और न ही उदय भानु। अंदेशा है कि सितंबर में ही प्रियंका की मौत हुई है। वहीं पूछताछ में पता चला है कि 5 दिसंबर को उदय भानु घर पर ताला लगाकर हरिद्वार चला गया था।

मानसिक स्थिति और तंत्र-मंत्र का कोण

सीओ कैंट के मुताबिक, शुरुआती पूछताछ में उदय भानु ने तंत्र-मंत्र के चक्कर में मौत होने की बात कही है लेकिन उसके बयानों में विरोधाभास है। पत्नी की मौत के बाद से वह गहरे तनाव और अकेलेपन में था। बेटी के शव को न जलाकर उसके साथ ही रहना उसकी विक्षिप्त मानसिक स्थिति की ओर इशारा करता है। पुलिस अब उसकी मानसिक जांच भी कराने पर विचार कर रही है। उन्होंने बताया कि उदय भानु स्पष्ट नहीं बता पा रहा है कि प्रियंका की मौत कब हुई और वह कितने समय तक शव के साथ घर में रहा। जांच जारी है।

संविदा के महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला

जौनपुर। उमानाथ सिंह विधि महाविद्यालय में शनिवार को भारतीय संविदा अधिनियम पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रशांत मिश्र मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने संविदा के महत्व पर व्याख्यान दिया। अपने संबोधन में श्री मिश्र ने जीवन में संविदा के महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने लॉर्ड स्टोयल के कथन संविदा फालतू समय की मजाक बाजी नहीं है को उद्धृत करते हुए इसकी व्याख्या प्रस्तुत की।महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आशुतोष मिश्र ने सभी उपस्थित लोगों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सर्वेन्द्र कुमार ने किया, जिन्होंने मुख्य अतिथि के व्याख्यान को और अधिक स्पष्ट किया। इस संगोष्ठी में महाविद्यालय के प्रबंधक राघवेन्द्र प्रताप सिंह, प्राध्यापकगण देवेश पाठक, डॉ. अच्छेलाल पाल, रमेशचन्द्र पाण्डेय, डॉ. साधना मिश्रा, डॉ. पूजा सिंह, डॉ. सुदक्षिणा यादव, नितेश कुमार सहित कई शिक्षणेत्तर कर्मचारी और बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

इंस्टेंट कॉफी से कितनी अलग है फिल्टर कॉफी, कौन सी है ज्यादा फायदेमंद?

कॉफी दुनिया की सबसे पॉपुलर ड्रिंक में से एक है। इसे इसके रिच फ्लेवर के साथ ही एनर्जिंग इफेक्ट के लिए सबसे ज्यादा पसंद किया जाता है। फिल्टर कॉफी और इंस्टेंट कॉफी के बारे में आपने काफी बार सुना होगा, लेकिन क्या आपको पता है कि इसमें क्या फर्क होता है और कौन सी ज्यादा फायदेमंद है।

कॉफी सिर्फ एक ड्रिंक नहीं है, बल्कि ये लोगों के इमोशन से जुड़ी हुई है। ऑफिस की सुस्ती दूर भगानी हो या फिर लव पार्टनर के साथ फर्स्ट डेट हो, एक कप कॉफी बात बना सकती है। किसी की तो सुबह की शुरुआत ही कॉफी के बिना अधूरी रहती है। ये कई तरह से सेहत के लिए भी फायदेमंद है। लाटे से लेकर कैपुचीनों, एस्प्रेसो,मॉका, तक कॉफी को फ्लेवर के हिसाब से भी कई अलग-अलग तरीकों से बनाया जाता है, लेकिन अगर नॉर्मल कॉफी की बात की जाए तो इंस्टेंट और फिल्टर कॉफी बेहद पॉपुलर हैं। खासतौर पर साउथ इंडिया में लोग ट्रेडिशनली डेली रूटीन में भी फिल्टर कॉफी पीना पसंद करते हैं।

फोकस इंप्रूव करना, फैट बर्न, एनर्जेटिक महसूस कराना, मूड को बूस्ट करना आदि के लिए कॉफी बेहद हेल्पफुल होती है, क्योंकि इसमें कैफीन के अलावा कई पावरफुल एंटीऑक्सीडेंट्स भी पाए जाते हैं, जो आपकी ओवरऑल हेल्थ के लिए फायदेमंद हो सकते है। हर कल्चर में कॉफी को लेकर अनूठे रिच्युअल्स तक हैं। तो चलिए जान लेते हैं इंस्टेंट कॉफी और फिल्टर कॉफी में क्या है अंतर।

इंस्टेंट कॉफी क्या है?

जैसा कि नाम है ठीक उसी तरह से ये इंस्टेंट बनकर तैयार हो जाती है। इसे तैयार करने का सिंपल मेथड है इंस्टेंट कॉफी पाउडर को सीधे दूध या पानी में मिलाकर आप एक कप कॉफी कुछ ही मिनटों में बनाकर तैयार कर सकते हैं। सीधे तौर पर कहा जाए तो इंस्टेंट कॉफी पाउडर एक सामान्य कॉफी है। कॉफी बीन्स को रोस्ट करते हैं, पीसकर पाउडर बनाते हैं। इसके बाद इसे फ्रीज ड्राइंग या फिर स्प्रे ड्राइंग प्रोसेस से क्रिस्टल्स में चेंज किया जाता है।

फिल्टर कॉफी बनाने का प्रोसेस

अगर आप साउथ इंडिया साइड जासे केरल, बेंगलुरु, चेन्नई, तमिलनाडु या इधर साइड के किसी भी शहर में जाएंगे तो आपको फिल्टर कॉफी सर्व की जाएगी। दरअसल इसमें कॉफी को बनाने का पूरा प्रोसेस चेंज हो जाता है। इसमें एक पीतल के बर्तन का यूज किया जाता है, जो खासतौर पर फिल्टर कॉफी के लिए डिजाइन किया गया है। इस बर्तन या टंबलर को दबारा भी कहते हैं।

टंबलर के ऊपरी हिस्से में कॉफी पाउडर एड करते हैं और फिर ऊपर से गर्म पानी डालकर ढक्कन बंद कर देते हैं। इसके बाद इसे कम से कम 20 से 30 मिनट के लिए ऐसे ही छोड़ दिया जाता है। इस टंबलर में फिल्टर एक तरह की छलनी लगी होती है, जिससे कॉफी पानी के साथ धीरे-धीरे छनकर नीचे वाले हिस्से में चली जाती है। तैयार की गई इस कॉफी को कुछ लोग सीधे पीना पसंद करते हैं तो कुछ इसे अपने हिसाब से गर्म दूध और चीनी मिलाकर तैयार करते हैं। इसके बाद इसे पीतल या फिर स्टील के गिलास में परोसा जाता है। ये साउथ इंडियन कल्चर में न सिर्फ डेली रूटीन बल्कि मेहमाननवाजी का एक अहम हिस्सा है।

क्या है बेसिक फर्क?

इंस्टेंट कॉफी और फिल्टर कॉफी में बनाने का प्रोसेस तो अलग है ही। इसके अलावा इसमें एक और फर्क है कि इंस्टेंट कॉफी पाउडर को उबली हुई कॉफी को डिहाइड्रेट करके यानी पानी अलग करके तैयार किया जाता है, जिससे ये तुरंत पानी या फिर दूध में घुल जाती है,फिल्टर कॉफी में फ्रेश कॉफी बीन्स को पीसकर उसके पाउडर से तैयार किया जाता है, जो आपको ज्यादा रिच फ्लेवर के साथ ही ऑथेंटिक अरोमा देती है।

कौन सी कॉफी है बेस्ट?

अगर आपको बहुत रिच टेस्ट चाहिए तो फिल्टर कॉफी बेस्ट रहती है। अगर आपको फटाफट कॉफी तैयार करनी है तो इंस्टेंट कॉफी बेस्ट रहती है, क्योंकि ये फटाफट बनकर तैयार हो जाती है। इस तरह से आप अपनी सुविधा के मुताबिक कॉफी बनाकर पी सकते हैं।

हेल्थ पर क्या इंपैक्ट होता है?

आपने इंस्टेंट कॉफी और फिल्टर कॉफी के बीच अंतर तो समझ लिया अब ये भी जान लें कि इससे सेहत पर क्या असर होता है। दरअसल इंस्टेंट कॉफी में कैफीन की मात्रा बहुत कम हो जाती है, इसलिए ये उन लोगों के लिए अच्छी रहती है, जो लोग कैफीन के प्रति सेंसिटिव रहते हैं, लेकिन कॉफी पसंद है और हल्की एनर्जी के लिए इसे पीना चाहते हैं।

फिल्टर कॉफी को पीने का फायदा ये होता है कि इसे बनाने के प्रोसेस में कॉफी से ज्यादातर ऑयल जैसे (कैफेस्टोल और कहवेओल) को छनकर निकल जाते हैं जो कोलेस्ट्रॉल को बढ़ा सकते हैं। यही चीज इंस्टेंट कॉफी पाउडर को बनाने के प्रोसेस में भी होती है। हालांकि इसका दूसरा पहलू ये भी है कि इंस्टेंट कॉफी में कुछ ब्रांड्स फ्लेवर बढ़ाने के लिए एक्स्ट्रा आर्टिफिशियल सब्स्टेंस भी मिलाते हैं। फिल्टर कॉफी का टेस्ट ज्यादा प्योर होता है और इसमें नेचुरल तत्व भी ज्यादा होते हैं, इसलिए ये आपके हार्ट और ब्रेन के लिए ज्यादा फायदेमंद हो सकती है, लेकिन कैफीन की मात्रा को ध्यान में रखते हुए सीमित मात्रा में लेना चाहिए।

क्या आपको भी आता है बहुत ज्यादा पसीना ? अगर हां, तो यह किसी अंदरूनी समस्या का हो सकता है संकेत

पसीना आना (चाहे कसरत की वजह से हो या गर्मी के संपर्क में आने से) एक नेचुरल फिजिकल प्रोसेस है, जो शरीर के तापमान को कंट्रोल करती है (थर्मोरेगुलेशन) और शरीर को ठंडा रखती है। पसीने की ग्रंथियों से निकलने वाली नमी त्वचा से भाप बनकर उड़ जाती है, जिससे शरीर की अधिक गर्मी निकल जाती है। यह प्रोसेस दिल की धड़कन और मेटाबॉलिक एक्टिविटी में बढ़ोतरी से शुरू हो सकती है, जैसे कि फिजिकल एक्टिविटी के दौरान। हालांकि पसीना आना आम तौर पर जीवन का एक नॉर्मल हिस्सा है, लेकिन बहुत ज्यादा पसीना आना चिंता और शर्मिंदगी का कारण बन सकता है। इसे न तो नजरअंदाज किया जाना चाहिए और न ही इसे कोई छोटी-मोटी समस्या मानकर टाल देना चाहिए।

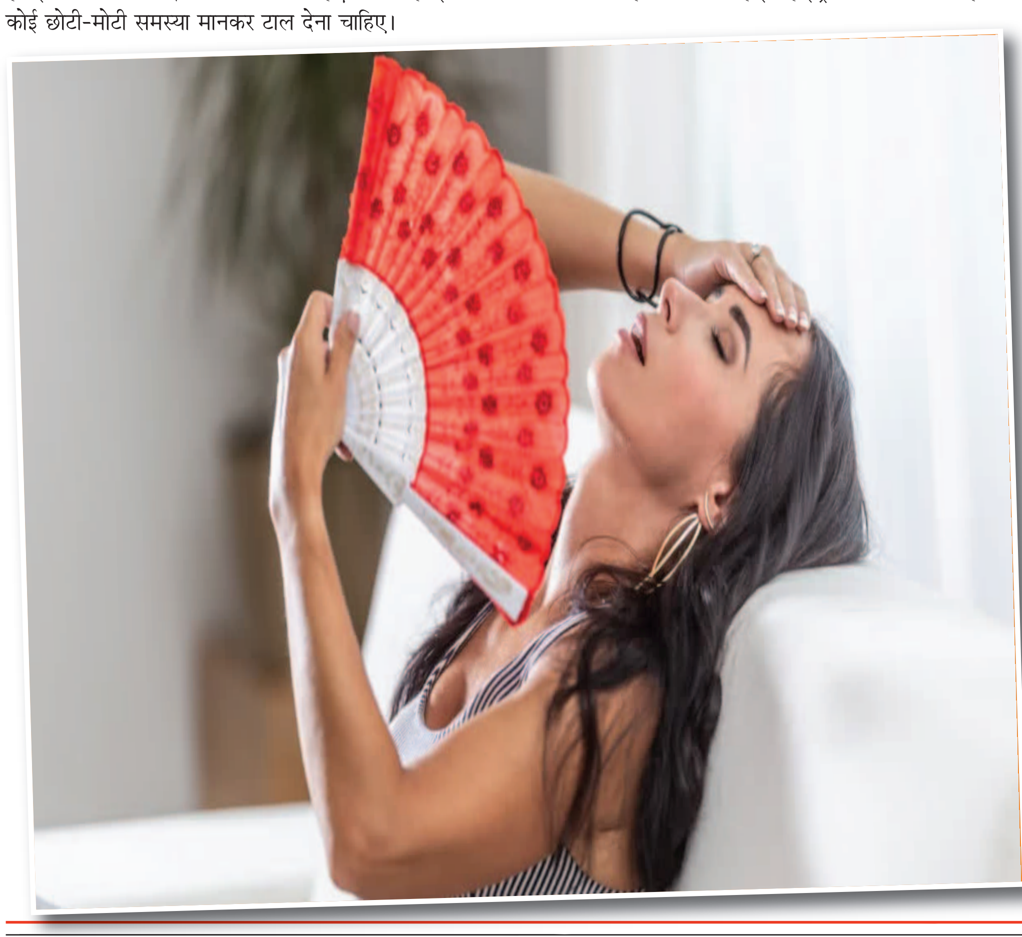

पसीना क्यों आता है?

क्लीवलैंड क्लिनिक के अनुसार, पसीना एक नमकीन लिक्विड सब्सटेंस है जो त्वचा में मौजूद ग्रंथियों द्वारा शरीर के तापमान को एक हेल्दी लेवल पर बनाए रखने के लिए बनाया जाता है। यह शरीर को ज्यादा गरम होने से बचाता है और आपको सुरक्षित रूप से एक्सरसाइज करने, गर्मी में बाहर काम करने, या गर्म जलवायु में रहने में सक्षम बनाता है। हालांकि, कुछ हेल्थ कंडीशन दवाएं शरीर की सामान्य रूप से पसीना निकालने की क्षमता को प्रभावित कर सकती हैं।

ऐसे में, यदि आपको ज्यादा पसीना आता है, तो यह इस बात का संकेत है कि आपको हाइपरहाइड्रोसिस की समस्या हो सकती है। हाइपरहाइड्रोसिस का अर्थ है बहुत ज्यादा पसीना आना, एक ऐसी स्थिति जो हमेशा गर्मी या शारीरिक मेहनत से जुड़ी नहीं होती। इस स्थिति के कारण आपको इतना ज्यादा पसीना आ सकता है कि आपके कपड़े पूरी तरह भीग जाएं या आपके हाथों से पसीना टपकने लगे। अत्यधिक पसीना आना आपकी रोजमर्रा की दिनचर्या को बाधित कर सकता है और सामाजिक चिंता व शर्मिंदगी का कारण बन सकता है।

बहुत ज्यादा पसीना आने के कारण

बहुत ज्यादा पसीना आने की समस्या का इलाज करना आम तौर पर फायदेमंद होता है। इलाज अक्सर पसीना कम करने वाले लोशन के इस्तेमाल से शुरू होता है। अगर इनसे आराम नहीं मिलता, तो आपको अलग-अलग दवाएं और थेरेपी आजमाने की जरूरत पड़ सकती है। गंभीर मामलों में, आपका डॉक्टर पसीने की ग्रंथियों को हटाने या बहुत ज्यादा पसीना आने के लिएजिम्मेदार नसों को काटने के लिए सर्जरी का सुझाव दे सकता है।

पसीना आने के फायदे

डिटॉक्सः आज के समय में, माइक्रोप्लास्टिक्स और प्रदूषण के कारण शरीर में कई तरह के जहरीले पदार्थ जमा हो रहे हैं। इनमें से कुछ जहरीले पदार्थ रोज नहाने से निकल जाते हैं। हालांकि, शरीर बाकी बचे कई जहरीले पदार्थों को पसीने के जरिए बाहर निकाल देता है। खास बात यह है कि पसीना उन जहरीले पदार्थों जैसे कि (सीसा, पारा, कैडमियम, आर्सेनिक और प्लास्टिक) को बाहर निकालता है, जो त्वचा की गहराई में जमा होते हैं।

एक अध्ययन के अनुसार , रेगुलर पसीना आना शरीर से अतिरिक्त सूक्ष्म पोषक तत्व, मेटाबॉलिक प्रोसेस के बेकार उत्पादों और टॉक्सिन्स को बाहर निकालने सहित अन्य महत्वपूर्ण होमियोस्टैटिक कार्यों के लिए जिम्मेदार है।

त्वचा की नमी के लिए जरूरी : बंद रोमछिद्रों को खोलने के लिए पसीना आना फायदेमंद होता है। इसके अलावा, यह त्वचा की रेस्पिरेटरी प्रोसेस को बेहतर बनाता है। ड्राई स्किन से पीड़ति लोगों के लिए पसीना आना फायदेमंद होता है। इससे त्वचा नमीयुक्त और हाइड्रेटेड रहती है। पसीना त्वचा को मुलायम बनाने में भी मदद करता है। सैर, योग और व्यायाम के दौरान पसीना आने से ब्लड सर्कुलेशन बढ़ता है और ऑक्सीजन की आपूर्ति बढ़ती है।

हाथों की खुरदरी त्वचा को मुलायम बनाने के लिए अपनाएं ये प्रभावी तरीके

हाथों की मुलायम त्वचा अक्सर काम करने की वजह से खुरदुरी और कठोर हो जाती है। यह समस्या खासकर सर्दियों में ज्यादा परेशान करती है, जब ठंड और सूखी हवा हमारे हाथों की नमी को छीन लेती है। इस लेख में हम कुछ सरल और प्रभावी सुझाव देंगे, जिनसे आप अपने हाथों की खुरदरी त्वचा को मुलायम बना सकते हैं। इन सुझावों को अपनाकर आप अपने हाथों को स्वस्थ और सुंदर बना सकते हैं।

रोजाना नमी देने वाली क्रीम का उपयोग करें

अपने हाथों को मुलायम बनाने के लिए सबसे जरूरी कदम है नियमित रूप से नमी देने वाली क्रीम का उपयोग करना। नहाने या हाथ धोने के बाद तुरंत क्रीम लगाएं, ताकि आपकी त्वचा नमी को सोख सके। इससे आपके हाथों की नमी बनी रहेगी और वे खुरदरे नहीं होंगे। अच्छे परिणाम के लिए गाढ़ी और चिकनी क्रीम चुनें, जो लंबे समय तक आपकी त्वचा पर बनी रहे और उसे पोषण दे सके।

गर्म पानी से बचें

गर्म पानी से हाथ धोने या नहाने से बचें, क्योंकि यह आपकी त्वचा की नमी को छीन लेता है और उसे खुरदरा बना देता है। हमेशा हल्के गर्म पानी का उपयोग करें, ताकि आपकी त्वचा की नमी बनी रहे और हाथ मुलायम रहें। इसके अलावा हल्के गर्म पानी से हाथ धोने पर त्वचा को आराम भी मिलता है और खुरदरापन कम होता है। इस तरह आप अपने हाथों को स्वस्थ और सुंदर बना सकते हैं।

प्राकृतिक तेल का उपयोग करें

जैतून के तेल, नारियल के तेल या बादाम के तेल जैसे प्राकृतिक तेल आपके हाथों के लिए बहुत फायदेमंद होते हैं। सोने से पहले इन तेलों से हाथों की मालिश करें, ताकि आपकी त्वचा रात भर पोषण पा सके। यह न केवल आपकी त्वचा को पोषण दे सकते हैं, बल्कि उसे मुलायम भी बना सकते हैं। इसके अलावा ये तेल आपकी त्वचा को गहराई से नमी प्रदान करते हैं, जिससे आपके हाथ लंबे समय तक सुंदर बने रहते हैं।

मृत कोशिकाओं को हटाएं

हफ्ते में एक बार मृत कोशिकाओं को हटाना जरूरी है, ताकि नई कोशिकाओं को बढ़ावा मिले। इसके लिए आप चीनी या नमक वाले मिश्रण का उपयोग कर सकते हैं। इन घोल से अपने हाथों को घिसें और फिर ठंडे पानी से उन्हें धो लें। इन सरल तरीकों को अपनाकर आप अपने हाथों की खुरदरी त्वचा को आसानी से मुलायम बना सकते हैं। इन सुझावों का नियमित पालन करने से आपके हाथ स्वस्थ और सुंदर बने रहेंगे।

आज से बदल गए टोल प्लाजा के नियम, बिना फास्टैग कटेगी जेब और कैश भी हुआ बंद

नई दिल्ली, एजेंसी। देशभर में हाईवे पर सफर करने वालों के लिए आज यानी 10 अप्रैल से कई अहम और बड़े बदलाव लागू हो गए हैं। अगर आपकी गाड़ी पर फास्टैग (स्न्रस्ञ्जड्डद्द) नहीं लगा है, तो अब आपकी जेब ज्यादा ढीली होने वाली है। केंद्र सरकार के नए नियम 10 अप्रैल 2026 से पूरे देश में प्रभावी हो चुके हैं। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के सख्त निर्देशों के मुताबिक, अब टोल प्लाजा पर कैश लेन-देन पूरी तरह से बंद कर दिया गया है। इसके अलावा, बिना फास्टैग या इलेक्ट्रॉनिक टोल कलेक्शन सिस्टम के यात्रा करने वाले वाहन चालकों को अब सामान्य टोल टैक्स से 25 प्रतिशत अधिक राशि जुर्माने के तौर पर चुकानी होगी।

फास्टैग नहीं होने पर ऐसे करना होगा भुगतान और लगेगा इतना जुर्माना

टोल प्लाजा पर कैश सिस्टम बंद होने के बाद कई लोगों के मन में यह सवाल है कि बिना फास्टैग के पेमेंट कैसे होगा। नए नियमों के मुताबिक, अगर किसी गाड़ी पर फास्टैग नहीं है या वह एक्टिवेट नहीं है, तो ड्राइवर को यूपीआई (क्कढ्ढ) के जरिए पेमेंट करने की सुविधा दी जाएगी। लेकिन, इस सुविधा के लिए भारी कीमत चुकानी होगी। यूपीआई से पेमेंट करने पर वाहन चालक को सामान्य टोल फीस से 25 प्रतिशत ज्यादा पैसा देना होगा। इसे ऐसे समझा जा सकता है कि अगर किसी टोल प्लाजा की फीस 100 रुपये है, तो बिना फास्टैग वाले चालक को यूपीआई से 125 रुपये का भुगतान करना पड़ेगा।

सरकार ने आखिर क्यों उठाया यह बड़ा और सख्त कदम?

सड़क परिवहन मंत्रालय का इस नए और सख्त नियम के पीछे स्पष्ट तर्क है। इस कदम का मुख्य उद्देश्य टोल प्लाजा पर लगने वाली भारी भीड़ को कम करना और वाहनों की बिना किसी रुकावट के निर्बाध आवाजाही को सुनिश्चित करना है। फास्टैग प्रणाली से भुगतान चंद सेकंड में हो जाता है, जिससे लंबी कतारों और ट्रैफिक जाम की समस्या से बड़ी राहत मिलती है। इसके साथ ही सरकार ने यह भी साफ कर दिया है कि नियमों का उल्लंघन करने वालों पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी और उन्हें ई-नोटिस भी भेजा जा सकता है। नियमों के मुताबिक जुर्माने की रकम का भुगतान भी तीन दिन के भीतर करना अनिवार्य होगा।

फास्टैग के सालाना पास की फीस में भी की गई बढ़ोतरी

नियमित तौर पर हाईवे का इस्तेमाल करने वालों को भी सरकार ने एक और झटका दिया है। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (हृ॥्रढ्ढ) की नई गाइडलाइंस के मुताबिक, अब वाहन चालकों को फास्टैग के सालाना पास के लिए 3,000 रुपये की जगह 3,075 रुपये चुकाने होंगे। यह बढ़ी हुई नई दर वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए लागू कर दी गई है। आपको बता दें कि यह सालाना पास उन निजी (नॉन-कमर्शियल) वाहनों के लिए ही मान्य होता है, जिनमें एक वैध और चालू स्थिति वाला फास्टैग लगा होता है।

एशिया-प्रशांत क्षेत्र में ग्रोथ की गति धीमी होने के बावजूद भारत के चीन समेत अन्य अर्थव्यवस्थाओं से आगे निकलने का अनुमान: एडीबी

नई दिल्ली, एजेंसी। भू-राजनीतिक चुनौतियों के बीच एशिया-प्रशांत क्षेत्र में आर्थिक वृद्धि धीमी पड़ने के बावजूद भारत इस क्षेत्र और चीन से आगे निकलने के लिए तैयार है। एशियन डेवलपमेंट बैंक (एडीबी) द्वारा शुक्रवार को जारी एक रिपोर्ट में यह बात कही गई है।

एडीबी के विश्लेषण के मुताबिक, विकासशील एशिया और प्रशांत क्षेत्र की आर्थिक वृद्धि दर भू-राजनीतिक तनाव और वैश्विक व्यापार में अनिश्चितता के कारण पिछले वर्ष के 5.4 प्रतिशत से घटकर 2026 और 2027 में 5.1 प्रतिशत रहने का अनुमान है।

इसके विपरीत, भारत की आर्थिक वृद्धि 2026 में 6.9 प्रतिशत रहने का अनुमान है, जो मजबूत घरेलू खपत के चलते 2027 में बढ़कर 7.3 प्रतिशत हो सकती है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि इस साल और 2027 में एशिया-प्रशांत क्षेत्र की ज्यादातर अर्थव्यवस्थाओं की ग्रोथ धीमी पड़ने की आशंका है, लेकिन भारत की स्थिति अपेक्षाकृत मजबूत बनी हुई है।

एडीबी ने यह भी कहा कि यह क्षेत्र मजबूत घरेलू मांग, स्थिर श्रम बाजार और बढ़ते इंफ्रास्ट्रक्चर खर्च के चलते अभी भी बेहतर स्थिति में है, हालांकि जोखिम नीचे की ओ र बने हुए हैं।

रिपोर्ट में कहा गया है, पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (पीआरसी) में आर्थिक वृद्धि इस साल घटकर 4.6 प्रतिशत और अगले साल 4.5 प्रतिशत रहने का अनुमान है, जो पिछले साल 5 प्रतिशत थी। इसके पीछे प्रॉपर्टी सेक्टर की कमजोरी और निर्यात में धीमापन मुख्य कारण हैं।

एडीबी के चीफ इकोनॉमिस्ट अल्बर्ट पार्क ने कहा कि मिडिल ईस्ट में लंबे समय तक चलने वाला संघर्ष ऊर्जा और खाद्य कीमतों को बढ़ा सकता है और वित्तीय स्थितियों को और खराब कर सकता है, जो इस क्षेत्र के भविष्य के लिए सबसे बड़ा खतरा है।

रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि वैश्विक व्यापार नीतियों में लगातार उतार-चढ़ाव से भी क्षेत्र की ग्रोथ पर नकारात्मक असर पड़ सकता है।

हालांकि, मजबूत निजी खपत और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) से जुड़े उत्पादों की बढ़ती मांग क्षेत्र की अर्थव्यवस्थाओं को कुछ हद तक समर्थन मिलने की उम्मीद है।

इसके अलावा, तेल की कीमतें फिलहाल ऊंची बनी रह सकती हैं, लेकिन अगर भू-राजनीतिक तनाव कम होता है, तो आने वाले समय में इनमें स्थिरता आ सकती है।

भारतीय रेलवे सुरक्षा बढ़ाने के लिए कम्पोजिट स्लीपर का करेगा इस्तेमाल, एआई से होगी ट्रैक की मॉनिटरिंग

नई दिल्ली, एजेंसी। रेल मंत्रालय ने रेल यात्रा को अधिक सुरक्षित और आरामदायक बनाने के लिए कई कदमों की घोषणा की है। आधिकारिक बयान के अनुसार, इसमें पुलों के पास और प्वाइंट्स व क्रॉसिंग पर कंपोजिट स्लीपर के उपयोग जैसे उपाय शामिल हैं।

रेल मंत्रालय ने यह भी बताया कि ट्रैक की निगरानी के लिए एआई आधारित तकनीक का इस्तेमाल किया जाएगा। इसके तहत निरीक्षण वाहनों में खास एआई डिवाइस लगाए जाएंगे।

मौजूदा भारी लोहे और कंक्रीट के स्लीपरों की तुलना में नए कंपोजिट स्लीपर हल्के होंगे, ज्यादा भार सहने की क्षमता रखते हैं और बेहतर कुशनिंग देंगे। ये स्लीपर बिछाने और मरम्मत करने में भी आसान हैं।

इन स्लीपरों को जगह की जरूरत के अनुसार डिजाइन और लगाया जा सकता है, जिससे खासकर पुलों और प्वाइंट्स व क्रॉसिंग से गुजरते समय यात्रियों को ज्यादा आराम मिलेगा।

कंक्रीट और लोहे की तुलना में ये कंपोजिट स्लीपर ज्यादा

टिकाऊ होते हैं और मिश्रित सामग्री से बने होते हैं, जो प्रति वर्ग सेंटीमीटर 700 किलोग्राम तक का भार सह सकते हैं। इससे रेलवे के रखरखाव खर्च में भी कमी आने की उम्मीद है।

ट्रैक की स्थिति का आकलन करने के लिए निरीक्षण वाहनों में ग्राउंड पेनिट्रेशन रडार लगाए जाएंगे, जो एआई की मदद से ट्रैक की निगरानी करेंगे। इसके अलावा, वेल्डिंग की गुणवत्ता सुधारने के लिए मैग्नेटिक पार्टिकल टेस्टिंग तकनीक अपनाई जाएगी, जिससे छोटे-छोटे दोषों का भी पता लगाया जा सकेगा।

मंत्रालय के अनुसार, ये फैसले यात्रियों की सुरक्षा के प्रति रेलवे की प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं और सुरक्षित व आरामदायक यात्रा सुनिश्चित करने की दिशा में उठाए गए कदम हैं।

साथ ही, इंडियन रेलवे सस्ती यात्रा को प्राथमिकता देते हुए नॉन-एसी जनरल और स्लीपर कोच की संख्या बढ़ा रहा है। यात्रियों को किराए में औसतन 45 प्रतिशत तक की छूट दी जा रही है, ताकि सफर सस्ता बना रहे।

रेलवे हर साल लगभग 60,000 करोड़ रुपए की यात्री सब्सिडी देता है, जबकि मुंबई जैसे उपनगरीय क्षेत्रों के लिए अतिरिक्त 3,000 करोड़ रुपए की सब्सिडी भी प्रदान की जाती है।

शांति के बोल बनाम धमकी का खेल: समझौतों पर रजामंदी से पहले जुबानी जंग, कूटनीति के मेज पर किसकी होगी जीत?

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका-इस्राइल और ईरान के बीच शनिवार को इस्लामाबाद में शांति वार्ता होनी है। संभावना जताई जा रही है कि इस अमेरिका-ईरान के बीच इस शांति वार्ता से पश्चिम एशिया संकट का हल निकल सकता है। हालांकि, इसकी उम्मीदें कम ही हैं। ऐसा कहने की सबसे बड़ी वजह है अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का हालिया बयान। वहीं, ईरान भी अमेरिका के आगे झुकने को तैयार नहीं है।

पश्चिम एशिया में शांति प्रयासों के बीच अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक चेतावनी जारी की। उन्होंने कहा कि अगर इस्लामाबाद में शांति वार्ता विफल होती है, तो अमेरिका ईरान पर अपने सबसे बेहतरीन हथियारों का इस्तेमाल करके एक बड़ा सैन्य हमला करने के लिए तैयार है। गौरतलब है कि पश्चिम एशिया में

हालिया तैनातियों के बाद अमेरिकी सैनिकों की संख्या 50000 के पार पहुंच गई है। वहां पहले से ही करीब 2500 मरीन और 2500 नौसैनिक मौजूद हैं। अमेरिकी युद्धपोतों की संख्या भी खाड़ी क्षेत्र में बढ़ी है। वहीं, कई युद्धपोत पश्चिम एशिया की ओर रवाना भी हुए हैं।

ईरान की शर्तें लगा सकती हैं अड़ंगा

शांति वार्ता से पहले ईरान के संसदीय अध्यक्ष मोहम्मद बाकेर गालिबाफ के नेतृत्व में एक ईरानी प्रतिनिधिमंडल इस्लामाबाद पहुंचा। वहीं, अमेरिका के साथ होने वाली शांति वार्ता से पहले गालिबाफ ने साफ कर दिया है कि ईरान की पहले की शर्तें पूरी होने पर ही बातचीत आगे बढ़ सकती है। उन्होंने कहा कि ईरान बातचीत के लिए तैयार, लेकिन हमें अमेरिका पर भरोसा नहीं है। गालिबाफ ने यह भी कहा कि तेहरान की मांगों में लेबनान में युद्धविराम शामिल है। ईरान और मध्यस्थता कर रहे पाकिस्तान ने भी कहा कि यह अमेरिका के साथ युद्धविराम का हिस्सा होना चाहिए था। हालांकि, अमेरिका और इस्राइल ने इस बात से इनकार किया है। कहा जा सकता है कि ईरान की पूर्व-शर्तों पर अमेरिकी मुहर लगने से ही शांति वार्ता के सफल होने की उम्मीद है।

ईरान की प्रमुख शर्तें

प्रतिबंध हटानाः अमेरिका द्वारा ईरान पर लगे सभी प्रतिबंधों को स्थायी रूप से हटाना।

क्षेत्रीय नियंत्रणः होर्मुज जलडमरूमध्य पर ईरान का नियंत्रण जारी रहेगा।

यूरेनियम संवर्धनः ईरान को मिले यूरेनियम संवर्धन जारी रखने का अधिकार।

सेना की वापसीः क्षेत्र से अमेरिकी सैन्य बलों की पूरी तरह वापसी।

हमला न करने की गारंटीः अमेरिका द्वारा ईरान पर भविष्य में कोई सैन्य हमला न करने का लिखित आश्वासन।

युद्ध से हुए नुकसान का हर्जानाः संघर्ष के कारण ईरान को हुए आर्थिक नुकसान की भरपाई के लिए मुआवजा।

यूएम और आईएईए का रुखः ईरान के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद और परमाणु ऊर्जा एजेंसी के सभी प्रस्तावों को रद्द करना।

युद्ध की समाप्तिः लेबनान, इराक और यमन सहित सभी मोर्चों पर युद्ध की पूर्ण समाप्ति।

अमेरिका की क्या हैं शर्तें?

30 दिनों का युद्धविराम।

ईरान की परमाणु सुविधाओं को नष्ट करना।

भविष्य में परमाणु हथियार विकसित नहीं करने का भरोसा।

संवर्धित यूरेनियम के भंडार को अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) को सौंपना।

ईरान के परमाणु बुनियादी ढांचे की आईएईए द्वारा पूर्ण निगरानी और देश के भीतर यूरेनियम संवर्धन पर रोक।

क्षेत्रीय प्रॉक्सी (हिजबुल्ला, हमास आदि) के लिए ईरान का समर्थन खत्म करना।

क्षेत्रीय ऊर्जा बुनियादी ढांचे पर ईरान के हमलों को रोकना।

होर्मुज जलडमरूमध्य को फिर से खोलना।

ईरान पर अमेरिका और संयुक्त राष्ट्र के प्रतिबंधों को हटाना।

ईरान की मिसाइलों की संख्या और उनकी रेंज सीमित करने की मांग।

ईरान युद्ध में अमेरिकी सैनिकों ने पी 9 .5 लाख गैलन कॉफी और 20 लाख एनर्जी ड्रिंक, पेंटागन का खुलासा

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी रक्षा विभाग (पेंटागन) की एक ब्रीफिंग में ईरान संघर्ष के दौरान अमेरिकी सैनिकों की खपत को लेकर चौंकाने वाले आंकड़े सामने आए हैं। जॉइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ के चेयरमैन जनरल डैन कैन ने बताया कि इस सैन्य अभियान के दौरान सैनिकों ने लगभग 9.5 लाख गैलन कॉफी पी।

जनरल कैन ने कहा कि यह संघर्ष बेहद तनावपूर्ण और चुनौतीपूर्ण था। उन्होंने इसे बेहद कठिन और लगातार दबाव वाला ऑपरेशन बताया। कॉफी के अलावा, सैनिकों ने लगभग 20 लाख एनर्जी ड्रिंक भी पी, जिससे लगातार ऑपरेशन के दौरान उनकी सतर्कता बनी रहे।

लाखों भोजन और अन्य संसाधनों की खपत

रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिकी सैनिकों ने इस अवधि में लगभग 60 लाख भोजन का सेवन किया। इसके साथ ही बड़ी मात्रा में निकोटिन उत्पादों की खपत भी दर्ज की गई। यह आंकड़े दर्शाते हैं कि लंबे सैन्य अभियानों में केवल हथियार ही नहीं, बल्कि लॉजिस्टिक्स और मानव संसाधन भी कितने महत्वपूर्ण होते हैं।

ईरान युद्ध में अमेरिकी सैनिकों ने पी 9 .5 लाख गैलन कॉफी और 20 लाख एनर्जी ड्रिंक, पेंटागन का खुलासा

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी रक्षा विभाग (पेंटागन) की एक ब्रीफिंग में ईरान संघर्ष के दौरान अमेरिकी सैनिकों की खपत को लेकर चौंकाने वाले आंकड़े सामने आए हैं। जॉइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ के चेयरमैन जनरल डैन कैन ने बताया कि इस सैन्य अभियान के दौरान सैनिकों ने लगभग 9.5 लाख गैलन कॉफी पी।

जनरल कैन ने कहा कि यह संघर्ष बेहद तनावपूर्ण और चुनौतीपूर्ण था। उन्होंने इसे बेहद कठिन और लगातार दबाव वाला ऑपरेशन बताया। कॉफी के अलावा, सैनिकों ने लगभग 20 लाख एनर्जी ड्रिंक भी पी, जिससे लगातार ऑपरेशन के दौरान उनकी सतर्कता बनी रहे।

लाखों भोजन और अन्य संसाधनों की खपत

रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिकी सैनिकों ने इस अवधि में लगभग 60 लाख भोजन का सेवन किया। इसके साथ ही बड़ी मात्रा में निकोटिन उत्पादों की खपत भी दर्ज की गई। यह आंकड़े दर्शाते हैं कि लंबे सैन्य अभियानों में केवल हथियार ही नहीं, बल्कि लॉजिस्टिक्स और मानव संसाधन भी कितने महत्वपूर्ण होते हैं।

आर्टेमिस-II की वापसी के दौरान बढ़ गई थीं नासा की धड़कनें, गर्मी बढ़ने और रफ्तार से हो सकता था ब्लास्ट

वॉशिंगटन, एजेंसी। नासा का आर्टेमिस-2 मिशन सफलतापूर्वक पूरा हो गया है। 10 दिन की ऐतिहासिक चंद्र यात्रा के बाद चारों अंतरिक्ष यात्री शनिवार तड़के प्रशांत महासागर में सुरक्षित लैंडिंग के साथ पृथ्वी पर लौट आए। यह मिशन कई मायनों में ऐतिहासिक रहा और भविष्य में चंद्रमा पर स्थायी मानव उपस्थिति की दिशा में बड़ा कदम माना जा रहा है। री-एंट्री के दौरान कुछ मिनटों के संचार ब्लैकआउट ने तनाव जरूर बढ़ाया, लेकिन जैसे ही मिशन कमांडर रीड वाइसमैन की आवाज 'ह्यूस्टन, हम आपको साफ सुन पा रहे हैं' सुनाई दी, कंट्रोल रूम में राहत की लहर दौड़ गई।

इस मिशन में तीन अमेरिकी और एक कनाडाई अंतरिक्ष यात्री क्रिस्टीना कोच, विक्टर ग्लोवर, जेरेमी हैनसन और रीड वाइसमैन शामिल थे। यह

पिछले पांच दशकों में पहली बार था जब इंसानों ने चंद्रमा के पास जाकर फ्लाईबाय किया।

री-एंट्री सबसे बड़ा खतरा

मिशन का सबसे जोखिम भरा चरण पृथ्वी के वायुमंडल में वापसी रहा। अंतरिक्ष यान करीब 40,000 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार और 2,760 डिग्री सेल्सियस तापमान झेलते हुए लौटा। यह ध्वनि की गति से लगभग 30 गुना तेज और सूर्य की सतह के तापमान का लगभग आधा था। इस दौरान ओरियन कैप्सूल लाल-गर्म प्लाज्मा से घिर गया और करीब छह मिनट तक संपर्क टूट गया। सफलतापूर्वक पैराशूट खुलने और सुरक्षित लैंडिंग के बाद मिशन कंट्रोल में तालियां गूंज उठीं।

पुरानी चुनौती पर मिली जीत

2022 के आर्टेमिस-I मिशन में हीट शील्ड के क्षरण को लेकर चिंता जताई गई थी। इस बार जोखिम कम करने के लिए री-एंट्री का रास्ता छोटा और ज्यादा तीखा रखा गया, जिससे मिशन सुरक्षित रहा।

इस बार की टीम में क्या खास?

यह मिशन विविधता के लिहाज से भी खास रहा। क्रिस्टीना कोच पहली महिला बनीं, विक्टर ग्लोवर पहले अश्वेत अंतरिक्ष यात्री और जेरेमी हैनसन चंद्र मिशन पर जाने वाले पहले गैर-अमेरिकी बने। यह अपोलो युग के एकरूप दलों से बिल्कुल अलग तस्वीर पेश करता है।

नया रिकॉर्ड कायम

आर्टेमिस-II के अंतरिक्ष यात्रियों ने पृथ्वी से अब तक की सबसे अधिक दूरी तय की। वे अपोलो-13 के रिकॉर्ड से करीब 6,400 किलोमीटर आगे, कुल 4,06,771 किलोमीटर दूर तक पहुंचे।

दिखे अद्भुत नजारे

मिशन के दौरान अंतरिक्ष यात्रियों ने हजारों तस्वीरें लीं, जिनमें अर्थसेट नामक तस्वीर खास रही, जिसमें चंद्रमा की सतह के पीछे उगती पृथ्वी दिखाई देती है। उन्होंने उल्का पिंडों की चमक, अंतरिक्ष से सूर्य ग्रहण और चंद्रमा के दूर वाले हिस्से (फार साइड) को भी देखा, जिसे अब तक केवल रोबोटिक मिशन ही देख पाए थे।

भावनात्मक पल भी आए सामने

मिशन के दौरान एक भावुक क्षण तब आया जब अंतरिक्ष यात्रियों ने चंद्रमा के दो क्रेटरों का नाम अपने यान और वाइसमैन की दिवंगत पत्नी के नाम पर रखने की अनुमति मांगी।

अंतरिक्ष में भोजन और जीवन

मिशन के दौरान अंतरिक्ष यात्रियों के लिए 189 प्रकार के भोजन विकल्प उपलब्ध थे, जिनमें कॉफी, स्मूदी, टॉर्टिला, पास्ता, कुकीज और चॉकलेट शामिल थे। इन्हें पोषण और ऊर्जा जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया था।

मिशन की उपलब्धियां और चुनौतियां

यह मिशन एसएलएस रॉकेट और ओरियन यान की पहली मानवयुक्त उड़ान था। इसमें जीवन-समर्थन, नेविगेशन, प्रोपल्शन और आपातकालीन प्रणालियों का सफल परीक्षण किया गया। हालांकि, मिशन के दौरान शौचालय में खराबी और पानी व ईंधन प्रणाली में कुछ तकनीकी समस्याएं भी सामने आईं।

आगे की राह

नासा के मुताबिक, यह मिशन चंद्रमा पर इंसानों की वापसी की दिशा में अहम कदम है। अगले मिशन आर्टेमिस-III में अंतरिक्ष यात्री चंद्र लैंडर के साथ डॉकिंग का अभ्यास करेंगे, जबकि 2028 में आर्टेमिस-IV के तहत चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर लैंडिंग की योजना है। नासा ने कहा हम फिर से इंसानों को चंद्रमा पर भेजने और सुरक्षित वापस लाने के मिशन में लौट आए हैं, यह तो बस शुरुआत है।

केजरीवाल का पीएम मोदी पर सीधा हमला, बोले- लाखों वोट कटवाए गए

कोलकाता, एजेंसी। पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव से पहले आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर संस्थागत अधिग्रहण और लाखों वोटों की कटौती का आरोप लगाया। X पर एक पोस्ट में केजरीवाल ने कहा कि सभी संस्थाओं पर कब्ज़ा करने और लाखों वोटों की कटौती करवाने के बाद भी, अगर मोदी पश्चिम बंगाल चुनाव हार जाते हैं तो क्या होगा? पश्चिम बंगाल विधानसभा के 294 सदस्यों के लिए चुनाव दो चरणों में 23 अप्रैल और 29 अप्रैल को होने हैं, और मतगणना 4 मई को होगी। राज्य का राजनीतिक माहौल तनावपूर्ण बना हुआ है, जिसमें सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस (TMC) और भाजपा के बीच, विशेष रूप से मतदाता सूची संशोधन और चुनाव तैयारियों को लेकर, तीखी नोकझोंक देखने को मिली है।

टीएमसी के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी ने हाल ही में चुनाव आयोग और भाजपा पर बड़े पैमाने पर मतदाता सूचियों से नाम हटाने का आरोप लगाया। उन्होंने दावा किया कि टीएमसी के सत्ता में वापस आने पर इस प्रक्रिया को उलट दिया जाएगा और मतदाता सूचियों से हटाए गए नामों के वर्गीकरण पर सवाल उठाया। इस बीच, भाजपा ने पश्चिम बंगाल में अपना चुनाव प्रचार तेज कर दिया है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने 2026 के विधानसभा चुनावों के लिए पार्टी का घोषणापत्र जारी किया, जिसमें उन्होंने वादा किया कि अगर भाजपा राज्य में सरकार बनाती है तो छह महीने के भीतर समान नागरिक संहिता (यूसीसी) लागू कर दी जाएगी।

शाह ने घुसपैठ और पशु तस्करी के खिलाफ कड़े कदम उठाने का भी वादा किया और पश्चिम बंगाल में राजनीतिक हिंसा की जांच के लिए सुप्रीम कोर्ट के एक सेवानिवृत्त न्यायाधीश की अध्यक्षता में एक आयोग के गठन की घोषणा की। उन्होंने जोर देकर कहा कि जनता बदलाव चाहती है और आरोप लगाया कि मौजूदा सरकार ने नागरिकों में निराशा और भय पैदा कर दिया है। जैसे-जैसे चुनाव प्रचार तेज हो रहा है, विभिन्न पार्टियों के नेताओं के बीच तीखी बयानबाजी जारी रहने की उम्मीद है, जिससे राज्य में उच्च दांव वाले चुनावी मुकाबले में तनाव और बढ़ जाएगा।

पायलट की एक चूक और Parking में उतरा छगन भुजबल का हेलीकॉप्टर, मचा हड़कंप

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र के खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री छगन भुजबल शनिवार को पुणे में एक बड़े हादसे से बाल-बाल बच गए, जब उनका हेलीकॉप्टर निर्धारित हेलीपैड के बजाय गलती से एक वाहन पार्किंग में उतर गया। भुजबल पुणे जिले के परंदर तालुका के खानवाड़ी गांव में एक कार्यक्रम में शामिल होने आए थे, तभी यह घटना घटी। इस घटना में मंत्री और हेलीकॉप्टर पायलट दोनों को कोई चोट नहीं आई। हालांकि, पहुंचने पर पायलट ने पार्किंग क्षेत्र में एक खाली जगह देखी और उसे निर्धारित लैंडिंग ज़ोन समझकर हेलीकॉप्टर को वहीं उतारने की कोशिश की। एक वीडियो में हेलीकॉप्टर को हेलीपैड के पास एक खाली जगह पर उतरते हुए दिखाया गया है। बताया जाता है कि लैंडिंग के दौरान रोटर्स से उड़ने वाली धूल के कारण पायलट हेलीपैड से चूक गया। पुलिस ने बाद में पायलट को गलती के बारे में बताया, जिसके बाद हेलीकॉप्टर को सही जगह पर ले जाया गया। पिछले हफ्ते एक अलग घटना में, मालदा जिले में ममता बनर्जी के हेलीकॉप्टर के पास ड्रोन उड़ते देखे जाने के बाद तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया।

हमें जो करना था, वो नहीं कर पाए... पाकिस्तान में ईरान-अमेरिका वार्ता पर क्या बोले कांग्रेस नेता सलमान खुर्शीद

नई दिल्ली, एजेंसी। पाकिस्तान के इस्लामाबाद में अमेरिका और ईरान के बीच चल रही शांति वार्ता पर कांग्रेस नेता सलमान खुर्शीद ने कहा कि अगर बातचीत से कोई नतीजा निकलता है, तो स्थिति को बिगड़ने से बचाया जा सकता है। लेकिन अगर बातचीत ठीक से नहीं हुई, या वे एक-दूसरे को समझ नहीं पाए या सहमत नहीं हुए, तो हालात काबू से बाहर हो जाएंगे। आज यह कहना मुमकिन नहीं है कि क्या फिर से युद्ध होगा? आज दुनिया में कई जगहों पर इसका विरोध हो रहा है। ये विरोध यूरोप में और अमेरिका की जनता के द्वारा हो रहा है। हर जगह इसका विरोध हो रहा है। इजराइल में भी इसका विरोध हो रहा है।

सलमान खुर्शी उन्होंने कहा कि तो, क्या वहां के नेतृत्व में इतनी हिम्मत होगी कि वे फिर से युद्ध छेड़ दें, जबकि उन्हें अच्छी तरह पता है कि इसका पूरी दुनिया पर बुरा असर पड़ेगा? उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि फिर से कोई युद्ध न हो, बल्कि शांति बनी रहे। लेकिन बदकिस्मती से जो भूमिका हमें निभानी चाहिए थी कि हम शांति के दूत हैं और दुनिया को अच्छे सुझाव देते हैं। वह इस सरकार ने नहीं निभाई। सरकार बस मूक दर्शक बनी रही।

कांग्रेस सांसद जयराम रमेश ने केंद्र सरकार की विदेश नीति पर गहरी चिंता जाहिर की थी। उन्होंने अमेरिका और ईरान के बीच हुए संघर्ष विराम में पाकिस्तान की भूमिका को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए एक बड़ा झटका बताया। उन्होंने कहा कि अमेरिका-ईरान संघर्ष विराम में पाक की भूमिका PM मोदी की कूटनीति के लिए एक बड़ा झटका है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान पर "बमबारी और हमले" के अभियान को रोक दिया।

जयराम रमेश ने कहा कि दो हफ्ते के लिए दोनों पक्षों के बीच संघर्ष विराम की घोषणा करते हुए ईरान के 10-सूत्रीय प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। इसके बाद, ईरान ने भी ट्रंप की शांति पहल को स्वीकार कर लिया और दो हफ्ते के लिए 'स्ट्रेट ऑफ होर्मुज़' के रास्ते सुरक्षित मार्ग देने के साथ-साथ सैन्य अभियानों को रोकने पर सहमति जताई। उन्होंने कहा कि दोनों पक्षों के बीच बातचीत की मेजबानी करने में पाकिस्तान ने अहम भूमिका निभाई है।

छोटे उस्तादों के साथ थिरकीं नीरू बाजवा, जवाक के सेट से शेयर की मस्ती भरी झलक

पंजाबी और बॉलीवुड फिल्मों में काम कर अपनी अलग पहचान बनाने वाली अभिनेत्री नीरू बाजवा जल्द ही फिल्म जवाक में नजर आएंगी। गुरुवार को नीरू ने सॉन्ग जवाक की शूटिंग का मजेदार बीटीएस वीडियो पोस्ट किया। यह वीडियो इसलिए भी खास और मजेदार लग रहा है क्योंकि इसमें नीरू बच्चों के साथ मस्ती कर रही हैं और उनकी एनर्जी को मैच करते हुए डांस कर रही हैं। अभिनेत्री ने वीडियो इंस्टाग्राम पर पोस्ट करते हुए लिखा, संभलकर...छोटे-छोटे बच्चों में भी बहुत ज्यादा टैलेंट होता है। वाहेगुरु हमेशा आपको खुश और तरक्की में रखे। हमारी फिल्म जवाक जल्द ही सिनेमाघरों में दस्तक देगी।

शूटिंग के दौरान बच्चों के साथ उनका यह मजेदार वीडियो फैंस को बहुत पसंद आ रहा है।

सॉन्ग जवाक काफी मजेदार है। इसमें नीरू बच्चों के साथ डांस करती दिख रही हैं। गाने को वरी राय ने लिखा है, जबकि संभी ने इसका संगीत तैयार किया है। गाना सभी प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध है और इसे लोग काफी पसंद कर रहे हैं।

फिल्म 'जवाकÓ का निर्देशन जतिंद्र महुअर जबकि निर्माण संतोष सुभाष कर रहे हैं। फिल्म की स्क्रिप्ट जगदीप वारिंग ने लिखी है। यह फिल्म 17 अप्रैल 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। इस फिल्म में नीरू बाजवा के साथ गुरी घुमन, निर्मल ऋषि, बी.एन. शर्मा, राणा रणबीर और रविंदर मांड मुख्य भूमिकाओं में हैं। फिल्म को लेकर मुख्य जानकारी अभी सामने नहीं आई है।

नीरू बाजवा पंजाबी सिनेमा की जानी-मानी अभिनेत्री हैं। उन्होंने कई हिट फिल्मों में काम किया है और दर्शकों का खूब प्यार बटोरा है। अब उनकी नई फिल्म जवाक को लेकर काफी उत्सुकता है। यह फिल्म पंजाबी भाषा में है और इसमें नीरू की मजबूत अभिनय शैली एक बार फिर देखने को मिलेगी।

अभिनेत्री हिंदी कॉमेडी-ड्रामा फिल्म सन ऑफ सरदार 2 में नजर आई थीं। इस फिल्म में अजय देवगन मुख्य भूमिका में थे। फिल्म में अभिनेत्री नीरू ने डिंपल नाम का एक महत्वपूर्ण किरदार निभाया है। विजय कुमार अरोड़ा द्वारा निर्देशित इस फिल्म में मृणाल ठाकुर, रवि किशन और दीपक डोबरियाल भी हैं। यह फिल्म 2012 की सुपरहिट फिल्म का सीक्वल है।

चाहत खन्ना ने चुनी आत्म-जागरूकता की राह

तेज़ रफ्तार जिंदगी और बाहरी सफलता की होड़ के बीच, चाहत खन्ना एक ऐसी दिशा में कदम बढ़ा रही हैं, जहाँ असली फोकस भीतर के संतुलन पर है। उनका यह परिवर्तनकारी दौर केवल वेलनेस ट्रेंड्स तक सीमित नहीं, बल्कि एक गहरी आत्म-खोज की यात्रा है, जो शरीर, मन और ऊर्जा के बीच सामंजस्य स्थापित करने पर आधारित है।

योग, आयुर्वेद, न्यूमरोलॉजी और ऊर्जा से जुड़े अभ्यासों को अपनाते हुए चाहत खन्ना यह समझने की कोशिश कर रही हैं कि वास्तविक संतुलन कैसा महसूस होता है। उनका मानना है कि हर व्यक्ति की आंतरिक संरचना अलग होती है, इसलिए हीलिंग भी व्यक्तिगत होनी चाहिए, न कि एक जैसी सबके लिए। चाहत खन्ना कहती हैं, एक समय ऐसा आता है जब सब कुछ सही करने के बावजूद भी भीतर खालीपन महसूस होता है। इस यात्रा ने मुझे अपनी लय को समझना सिखाया है, जहाँ संतुलन किसी लक्ष्य की तरह नहीं, बल्कि एक स्वाभाविक अवस्था बन जाता है। उनकी यह सोच आज के बदलते दौर की झलक भी देती है, जहाँ वेलनेस अब सिर्फ फिटनेस नहीं, बल्कि गहरी आत्म-जागरूकता का हिस्सा बन चुका है। चाहत खन्ना की यह यात्रा न सिर्फ व्यक्तिगत बदलाव की कहानी है, बल्कि उन सभी के लिए प्रेरणा है जो खुद से जुड़ने की तलाश में हैं।

गिन्नी वेड्स सनी 2 का ट्रेलर जारी, बिंदास लड़की के प्यार में फंसे पहलवान अविनाश तिवारी

अविनाश तिवारी और मेधा शंकर की चर्चित फिल्म गिन्नी वेड्स सनी 2 सिनेमाघरों में आने के लिए तैयार है। इससे पहले निर्माताओं ने फिल्म का ट्रेलर जारी करते हुए फैंस को उत्साहित कर दिया है। प्रशांत झा ने फिल्म का निर्देशन किया है, जबकि विनोद बच्चन और उमेश कुमार बंसल ने मिलकर निर्माण किया है। इस फिल्म की पहली किस्त गिन्नी वेड्स सनी 2020 में रिलीज हुई थी, जिसमें यामी गौतम और विक्रांत मैसी मुख्य किरदार में थे।

गिन्नी वेड्स सनी 2 का ट्रेलर एक सीधे-साधे पहलवान लड़के और बिंदास लड़की के बीच बेमेल प्यार और शादी के ड्रामे के बीच घूमता है। इसमें पारिवारिक उम्मीदों, करियर, प्यार के बीच संघर्ष और कॉमेडी के साथ-साथ भावनात्मक पलों को दर्शाया गया है। फिल्म के 2 गाने छाप तिलक और ऐ खुदा ने रिलीज होकर पहले ही लोगों का दिल जीत लिया है। ये फिल्म 24 अप्रैल को सिनेमाघरों में दर्शकों का मनोरंजन करने आ रही है।

फिल्म में अविनाश तिवारी एक पहलवान के किरदार में नजर आ रहे हैं। ट्रेलर में उनका देसी अंदाज, अखाड़े की जिंदगी और दमदार व्यक्तित्व साफ झलकता है। उनका रफ-टफ लुक और सादगी भरा स्वभाव दर्शकों को आकर्षित करता है। साथ ही उनके किरदार में एक मासूमियत भी देखने को मिलती है, जो कहानी को भावनात्मक बनाती है।

वहीं मेधा शंकर पूरी तरह मॉर्डन और कॉन्फिडेंट किरदार में नजर आती हैं। उनका ग्लैमरस लुक, फैशन सेंस और बेबाक अंदाज ट्रेलर को एक नया रंग देता है। उनके किरदार में आज की स्वतंत्र सोच वाली लड़की की झलक दिखाई देती है, जो अपनी शर्तों पर जिंदगी जीना चाहती है।

ट्रेलर में दिखाया गया है कि अविनाश और मेधा की दुनिया बिल्कुल अलग है- एक तरफ देसी परंपराएं, तो दूसरी तरफ मॉर्डन सोच। जब ये दोनों एक-दूसरे के करीब आते हैं, तो कहानी में कई मजेदार और दिलचस्प मोड़ आते हैं। यही टकराव फिल्म की सबसे बड़ी खासियत नजर आती है।

ट्रेलर से साफ है कि 'गिन्नी वेड्स सनी 2' सिर्फ एक लव स्टोरी नहीं, बल्कि परिवार, रिश्तों और बदलती सोच की कहानी भी है। फिल्म में हर वर्ग के दर्शकों के लिए कुछ न कुछ खास रखने की कोशिश की गई है।

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक प्रभात पांडेय द्वारा साई ऑफसेट प्रिंटर्स 40, वासुदेव भवन कैसरबाग, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 2/74, विक्रांत खंड, गोमती नगर, लखनऊ से प्रकाशित।
शाखा कार्यालय: S-15/109, सेक्टर -15, इंदिरा नगर, लखनऊ। समस्त लेख, रचनाओं एवं विज्ञापन में लेखन और विज्ञापनदाताओं के अपने विचार हैं। इसके लिए आर्यावर्त क्रांति की कोई जिम्मेदारी नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र लखनऊ, उत्तर प्रदेश ही होगा। RNI No: UPHIN/2014/57034 Website: aryavartkranti.com
*सम्पादक: प्रभात पांडेय सम्पर्क: 9839909595, 8765295384 Email: aryavartkrantidainik@gmail.com